331
1941

अथरोमकसिद्धांतप्रारंभः॥ग्रंथसंख्या॥१२५० प० २५

श्रीगणेशायनमः ॥ ॐनमःश्रीरामकमिद्रोनाय ॥ ॥ धूम्रपुंजेप्रतिरोमकाचार्योवदति ॥ पुनरेवप्रवक्ष्यामिवरुणपुत्रप्रयत्नतः
सप्तद्वीपावतीपृथ्वी आकारेनस्थविस्तरं ॥ १ ॥ जंबुद्वीपंकुशद्वीपंचेंद्रद्वीपमथापरं ॥ शाल्मलंप्लक्षरोमेरं पुष्करंचनथाफरं ॥ २ ॥
अष्टकोटिभवेत्संख्याजंबुद्वीपस्यमंडलं ॥ त्रिकोणमंडलाभूमिश्राकाटाकारवर्तने ॥ ३ ॥ कुशद्वीपयोजनसंख्याप्रमाणंकोटित्रयानि
मंडलंधनुषाकारंयोजनानांप्रमाणतः ॥ ४ ॥ चंद्रकोटिभवेत्संख्याषष्टिकोटिचमेवच ॥ चंद्राकाराद्वीपरूपेणप्रमाणंशास्त्रवर्त्तने ॥ ५ ॥ उ
नरगोलंभवेत्संख्याषष्टिकोटिप्रमाणतः ॥ चतुष्कोणंतदाकारंदेवदानववर्त्तने ॥ ६ ॥ पूर्वगोलपरिज्ञानकोटिपंचाशमेवच ॥ वर्तुलंश्रा
म्यंतरूपंशास्त्रशास्त्रप्रवर्त्तने ॥ ७ ॥ विंशकोटिस्फविस्तारंपुष्करद्वीपप्रवर्त्तने ॥ त्वदाकारंभवेद्रूपंवदनेशास्त्रमानतः ॥ ८ ॥ शाल्मलि
द्वीपभवेत्संख्या त्रिंशत्कोटिप्रमाणतः ॥ मंडलंमंडलाकारंश्रृणुधूम्रप्रयत्नतः ॥ ९ ॥ सप्तद्वीपावतीपृथ्वीप्रमाणंकथितंमया ॥ एक
द्वीपस्यविवरमघोरंचरमानतं ॥ १० ॥ सप्तद्वीपप्रमाणंतुश्रीपद्मयेणभाषितं ॥ जंबुद्वीपप्रमाणंतुसंक्षेपकथितंमया ॥ ११ ॥ नवखंडा
भवेत्पृथ्वीकथयामिमविस्तरं ॥ देशाश्चनगरग्रामाःप्रमाणंश्रृणुपुत्रक ॥ १२ ॥ प्रथमंजंबुद्वीपपूर्वस्यांपूर्वस्यांदिशि ॥ पूर्वदेशगोडदे
कन्यकुब्जः ॥ कलिंग। गोल्ल। कुरंग। गद्धा। वेरंड। यमुनाकछ। स्वरूपा। अंतर्वेध। मागध। मध्यकुरु। डाहल। कामरू। पांडु। पांचाल।
सूरसेन। जालंधर। लोहितपुर ॥ २२ ॥ अथपश्चिमायांदिशि ॥ पश्चिमदेशा। सैंधवा। स्कंध। वल्लेन। सोराष्ट्र। कोकण। लाट।
अमोल। अर्बुद। मदपट। मरुदेशा। कछ। भाल्लवक। अवंती। पारियात्रक। कंबोज। नामलिप्त। फिरात। डाकट। सारवी। चोक
ण ॥ २१ ॥ उत्तरपथा। गुर्जर। कैकाणा। नेपाल। टाक। तुरष्क। तालिक। बर्बर। खस। कार। कालमीर। वजेर। हिमालय। लोहपुर।
श्रीराज। मूलस्थान। गजस्थान। हवमीर ॥ २० ॥ दक्षिणापथ। मलयाचल। सिंहल। पांडु। कोंकाल। अंध्रेतु। अवेध। कर्णाट। द्रवि
ड। श्रीपर्वत। विदर्भ। विराट। लोलनिर्पातट। आभीर। विरभुक्ति। कुमावंतु। ताम्र। सागर। मराट। कांची। पुलिंद। भृगुकछ ॥
मेलकन्यकातट। चाडुल। एकपाद। उर्द्धकर्ण ॥ २५ ॥ अथजंबुद्वीपमध्यदेशाः। उदयागिरि। वीण। पुरायाण। बलप। नबारिस

णु। सरयन। नामाउर। जरिमाणु। तावरिमाणु। दमावंदु। कंजाण। इक्षुम। इमफ। हाण। भूमीयाण। हलुआहण। मथुलबर
मलहणक। वरदक। घालंच। सिंहलंच। वकुमहण। अंतावी। अंतवल। लमाफरंज। जार्जाज। माजीज। तनार। इभावव
कपालिवा। घुंजंद। मूंमल। ममकेट। तुयार। यराजिम। उनरिज। उदिरयनाल। गेम। पहडेम। अंदुलीम। आजम।
म। जुरिजाण। मम्यकाफण। दाफाहल। आलेणरम। कुरुंतिहीण। नुरिआण। तगर। जजाडणमकाली। समुद्र। आरव
आणंद। सनाह। दांदण। माउणथ। तुंलुवेह। वंदंरवण। दुफार। इथंरस। इमिरकार। वद्धदण। किरात। नील। मिसरु।
इमाभह। मुहाणु। नाहिक। जिदफ। हगक। घामिल। सामताण। कामाण। जीरत। अमरथ। वसाम्पर। मीरज। हरमुज ॥
कज। आशोथर। ममार। आदन। वामिथफ। वगदाद। वेथिलेह। मुगदम। कुरम। हिलीममुद्र। पारास। मावर। केसणवी
ण। ब्रम्हाणगेआमार। आभिमानीसार। मथुराण। देलीम। रूम। शाख। कुराज। म हाथ। निलिंग। वलहथ। चकंगद। ह
जाजी। आमलि। वनहवंदि। मल्लिवार ॥ इतिजंबुद्वीपमध्यदेशाप्रमाण ॥ श्रीपद्मायणेकथितं ॥ ॥ श्रीरामकाचार्योव
दतिधूम्रश्रयतं ॥ ॥ अष्टाविंशतिकोटिनांपरणानांप्रमाणं २८००००००० चतुर्दशकोटिभवेत्संख्या १४००००००० वेल्ला
कुलानांभवेत्संख्या अशीतिसहस्रमेवच ॥ ८०००० वरग्रामाणांभवेत्संख्या ॥ ॥ १४६८५३१७६ अष्टाविंशतिलक्षणो
कोटिचतुर्दशाधिका ॥ महस्राःसप्तपंचाशत्षट्सप्तोत्तरंशतं ॥ एवंवरग्रमप्रमाणं ॥ अन्यानियानिग्रामाणितान्येवच
रसंख्यया ॥ अष्टाद्वादशविंशा याःकोटिपंचदशाग्रथा ॥ लक्षाष्टाविंशतिश्चैवमहस्राःसप्तसायकाः ॥ वेदवेदाधिकानीहशता
निविनयंयथा ॥ १२१५२८५३१४४ पर्वतानांयथासंख्याश्रृणुधूम्रप्रयत्नतः ॥ उत्तमाधममध्यरूढाःमहस्राशीतिसंख्यया
॥ ८००००० एवंजंबुद्वीपप्रमाणं ॥ श्रीपद्मायणेकथितं ॥ ॥ पुनरेवप्रवक्ष्यामिग्रहचारेरूपुत्रक ॥ मार्गवक्रअतीचारंग्रह
स्वंसमागमं ॥ १ ॥ उदयास्तमनंचैवक्षभुक्तिस्तथैवच ॥ पादानामेवसंयोगेस्वस्वास्वस्वंनुहेतुकं ॥ तथैवभवनेभाषंत

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

स्यवस्थामिलक्षणं॥ २ इतिश्रीवायणेसमस्तपृथ्वीग्रहविभागेउत्तरार्धनंत्या॥ यद्देशायस्यग्रहस्यभागेनहीनेकथयाम्यहं॥ धृवस्थय
यनं॥ श्रीरोमकाचार्योवदति॥ आदित्यविभागदेश॥ उदयगिरि॥ द्रोणनद॥ कलिंगदेश॥ शकदेश॥ यवन॥ मगध॥ चीण॥ महाचीण
भोट॥ महाभोट॥ मलक॥ श्रीपर्वत॥ तुषारान्यसिंधु॥ मथ्य॥ हिंदुस्थान॥ आरब॥ ॥ चंद्रविभागदेश॥ कौशल॥ कलिंगदेश॥ रोमक॥
तुषार॥ तुरुष्कस्थान॥ तरग॥ लाटदेश॥ मकर॥ समुद्र॥ अंतर्द्वीप॥ म्लेच्छ॥ मूल॥ मुद्गलमुख॥ मानुष॥ यमुना॥ बंगाल॥ लक्षणावती॥
पूर्वदेशसमस्त॥ वनवास॥ लवण॥ मणि॥ शंख॥ मौक्तिक॥ वप्र॥ निशाचर॥ यदुवित॥ महपाट॥ आदन॥ वज्रआण॥ एतेषांचंद्राधिप॥
अथरोमविभागदेश॥ द्रोणनद॥ नासत्यपर्ण॥ भीमरथी॥ उत्तरपार्श्व॥ महेंद्र॥ चोल॥ विदर्भ॥ उज्जयनी॥ कुंतक॥ फेरल॥ नागर॥ नृप
कुमार॥ भोगवर्धन॥ विराट॥ कुंजर॥ एतेषांभौमाधिप॥ अथबुधदेश॥ कोहित्य॥ सिंधुनद॥ आजुज्ञ॥ माचुज्ञ॥ वल्लकाण॥ काम
रू॥ पांड्र॥ पांचाल॥ पिप॥ लिक॥ मफालिह॥ नगर॥ मागध॥ जरित्राण॥ अंतर्वेध॥ अभीर॥ सिंधु॥ गणित॥ लिपि॥ लेखक॥ गंधर्व॥ शिल्प
ज्ञ॥ स्नेह॥ एतेषांबुधेधिप॥ अथगुरुदेश॥ मथुरा॥ भरत॥ सौवीर॥ द्वारवत॥ मरुकोट॥ अनंतपुर॥ मालवस्थाढ्य॥ गंगायमुना॥ गोदा
वरि॥ सरस्वती॥ नर्मदा॥ समस्तलंका॥ सिंदस्थद्वीप॥ गुर्जर॥ सिंधुमध्य॥ मंत्रिण॥ यज्ञक्रिया॥ सोमवल्ली॥ बंगाल॥ लक्षणावती॥
चंपकारण्य॥ कालवर्ण॥ अर्बुद॥ पर्वत॥ थलाग्र॥ वध्यपर्वत॥ तोरणमाल॥ समस्तदुर्ग॥ आभेर॥ एतेषांगुरोधिप॥ ॥ शुक्रविभाग
देश॥ प्रस्थल॥ मालवक॥ केकय॥ दर्शाणदेश॥ चंद्रभागा॥ रत्नाकर॥ उत्तरज॥ पुरान्ध्रिम॥ कोशाय॥ भृगुकल्ल॥ लाटदेश॥ अ
ज्ञमेर॥ रणस्तंभ॥ जालंधरपुर॥ नागरिकपुर॥ लवणस्थान॥ एकपाद॥ उर्ध्वकर्ण॥ वीरभुक्ति॥ क्षमावंत॥ ताम्रसागर॥ सरस्वतर॥ चि
त्रकूट॥ आभेर॥ वेटकपुर॥ गल्लुकातट॥ एतेषांशुक्रोधिप॥ ॥ अथशनिदेश॥ बर्बर॥ बंगाल॥ मागध॥ कुरुदेश॥ प्रभास॥ म
हीतट॥ सांकरिक॥ माहिष॥ कवर्त॥ वज्रदेश॥ कुगत॥ भिल्ल॥ खर॥ करभ॥ भृंग॥ तस्कर॥ मधराण॥ क्षारसमुद्र॥ तट॥ रुक्षावर्ती॥
सुफालिह॥ पिप्पल॥ श्रियानकुल॥ शनैश्चराधिप॥ ॥ अथराहुविभागदेश॥ वंबर्बर॥ आरिमाण॥ हारयु॥ गुआहिर॥ कोरमाण॥

375
1941

म्लेच्छनीति॥ शुद्धदीनागोमायु॥ मुखविवाक॥ दांभिकराक्षस॥ तिरिमिंगि॥ पूर्णगिरि॥ इंगरद्वि॥ शतयोजनपर्वतस्थनानिरधिप॥ ॥
अथकेतुविभाग॥ ॥ निशाउत्तर समरकंद॥ मलबार॥ गिरिदुर्ग॥ गिरिस्त्री॥ दूण॥ खस॥ मरुदेश॥ चोल॥ लंकाधिप॥ मूषक॥ पारदारिक॥
कुतूलेह॥ मंदोदर॥ शृंगारक॥ मिषाहण॥ बगदाद॥ बफार॥ दुफार॥ आदिमलबार॥ एतेषांकेतुरधिप॥ ॥ एवंजंबुद्वीपदेशानवग्रहवशेन
विभाजिता॥ पुनरेवप्रवक्ष्यामिराशीनांदेवास्यमंडले॥ मेषराशिविभागेनप्रमाणंकथयाम्यहं॥ पारस॥ बाबर॥ बगदाद॥ फेरल॥ नीणदे
श॥ गोडदेश॥ कल्यकुब्ज॥ आदन॥ मंडल॥ मेषराशिविभागेनप्रमाणं॥ बबूआण॥ उत्तरेष॥ ॥ सिंहराशिविभागे॥ तुरुष्कस्थान॥ आजुज
माचुज॥ मुगदेश॥ अरमीक॥ नीआण॥ मघराण॥ नाम॥ तिरिमिंगिगोलक॥ बंगाल॥ कुटंग॥ गढ॥ वेरंड॥ यमुना॥ स्वरूपा॥ धनुराशिविभागे॥
अंतर्वेध॥ मागध॥ डाहल॥ कामरू॥ पांडु॥ पंचाल॥ पाहणपुर॥ इंगराट॥ अर्बुद॥ मेदपाट॥ मरुकछ॥ मालवक॥ अवंती॥ पारियात्रक॥ कंबो
ज॥ नामलिप्त॥ गुर्जर॥ नेपाल॥ टाक॥ तुरुक॥ नाव्रिक॥ पप्र॥ कीर॥ काश्मीर॥ हिमालय॥ एतेमेषादयो—तपा॥ अथवृषकन्यामकरा॥
वृषराशिविभाग॥ अभीराण॥ इषकंदर॥ हरेउ॥ भीमनाण॥ विराट॥ तापीतट॥ आभीर॥ वीरभुक्ति॥ नाम्रसागर॥ कांची॥ मलयाचल॥ सिंहल॥
पांडु॥ कोशल॥ अवंध्या॥ कर्णाट॥ करंजण॥ दबसोर॥ रूणहासफ॥ किशमाण॥ द्रविड॥ श्रीपर्वत॥ विदर्भ॥ दभवीनि॥ पारासपुलिंद॥ भृगुक
ल्ल॥ एकपाद॥ उर्ध्वकर्ण॥ चीण॥ महाचीण॥ मकुराण॥ सिंधु॥ सरसाण॥ कीमाण॥ आदिमलबार॥ बल्लय॥ तवारिसाण॥ भूमीआण॥ हल्ल
आण॥ अंनाक्षी॥ फरंज॥ आजुज॥ किरात॥ पुलिंद॥ दक्षारवाल्हीक॥ पारसीक॥ तुषार॥ पराजिग॥ योगिनीपुर॥ लक्षांतपुरी॥ ततार॥ फषाजि
म॥ डहाल॥ डाहल॥ एतेमकरादय॥ ॥ अथमिथुनतुलकुंभादय॥ मिथुनविभागि॥ अरमीक॥ इषाहण॥ कीरमाण॥ गुआभीर॥ रोमकपट्ट
ण॥ अंनाक्षी॥ बल्लंग॥ तिलंग॥ तंबीरमाण॥ काउमीरचीण॥ इंगरस्थान॥ मफिर॥ हल्लआण॥ पश्चिमदेश॥ पारास॥ समरकंपट॥ मुगल
स्थान॥ बर्बरस्थान॥ आदिमलबार॥ रट्ट॥ डामपट्टण॥ प्रभासक्षेत्र॥ कुरुक्षेत्र॥ कोईलपर्वत॥ सिंधुसौराष्ट्र॥ पांचाल॥ उड्डियाण॥ एतेषांमि
थुनतुलकुंभादीनां॥ ॥ अथकर्कटकाटमेषा॥ मही॥ आण॥ महरेण॥ देउल॥ हजाज॥ भोमति॥ बंदी॥ आरबु॥ थरिज॥ खर्जर॥ स्त्रीराज॥ वनवा
स॥ सचिमुख॥ अश्वमुख॥ श्वमुख॥ किंनरमुख॥ निंबसार॥ मिसर॥ आदर॥ उत्तरपथ॥ समुद्र॥ मुखस्थान॥ भाणस्थान॥ गजस्थान॥ हिमालु

·य क्षीरसागर सप्तपर्वत रत्नाकर कृष्णस्तंभ · दुर्गादुर्ग सुमेरुगिरी आमेर अभयचंद पवित्रगिरि एतेषांकर्कोदय: ॥ ॥इतिश्रीपद्मा
यणेदुर्गादत्तराशिविभागेनंदद्या: ॥ चंद्रमसात्व ॥ ग्रहभागैरुफलं ॥ तात्कालिक ॥ चंद्रस्पष्टात्व ॥ फलं ॥ यत्रस्थयत्रकर्येदर्षासेषांग्रहचारव
शात्व ॥ चंद्रयोगेनदिनफलं ॥ मन्नद्वयेनापिभमेनतत्कालंनक्षत्रगुण्यंविभजेत्तिथघ्या ॥ नक्षत्रसंज्ञामुपयातिलब्धंनाड्योभवेत्तद्घटितास्मृती
या: ॥१॥ यत्रस्थादिनभक्षत्रेभसांकस्मद्गतानिच ॥ लब्धांकेयोजयेत्प्राज्ञश्चंद्रमात्कालिकोभवेत् ॥ २॥ नेत्रर्षिरागणितेदिमद्यतिंदुभुक्तघटि
कासमन्वितं ॥ बाणाब्धिरंध्रहतंचखेचरेचंद्रवज्रमितिमन्यतेबुधा: ॥ ३॥ चंद्रस्यचत्वारिवज्राणि ॥ मेष १ वृषभ २ एतानिचत्वारिमुख
नि ॥ यस्मिन्नंशे ॥ योजनानिषंढेद्यानांनेषांतत्तनानांनक्षत्रवारवशेनग्राह्यो ग्रहयोगात् फलंवाच्यंविवक्षमे ॥ ॥इतिश्रीपद्मा

मेष १ वृषभ २ मिथुन ३ कर्क ४	यणेगर्गकाचार्योवदति ॥ धृग्भृपुत्रश्रयतां ॥ ग्रहचारवशात्व ॥ युद्धंचतु:प्रकारं ॥ बाणकुंजरवंडछ
सिंह ५ कन्या ६ तुल ७ वृश्चीक ८	रिकादिकंतथापालिताभिद्धतेभदोर्दंडुरवंडाभर्दनामध्ये: ॥ हस्तमात्रभवेद्भद्दंद्वाद्धुमात्रसमागमा:
धनु ९ मकर १० कुंभ ११ मीन १२	वितस्तिमात्रहत्तुंडरवभेदश्चेनिरर्गल: ॥ तत्परिज्ञानंकरणे ॥ इहचुंचुश्चक्रायुद्धंचतु:प्रकार: ॥ ग्रहस्य

द्धंबहस्पतिश्चनैश्चर ॥ वर्ष २० तथाहितीयकराशिवशेनवर्ष १० तथातृतीयकराशिवशेनवर्ष २१ एवंवर्षाणिशतानि ६० ॥ यस्मिन्सं
वत्सरेयस्मिन्मासेयस्मिन्दिनेउत्पत्स्यंतितत्कालानंतरंगर्गकाचार्योवदतिशृणुधृग्भ्रयत्नत: ॥ युद्धंकुंभात द्वितीयके ॥ तुलकेतृतीय
राशिमिथुने ॥ ३ ॥ २ ॥ १ ॥ युद्धस्थानानि ॥ श्रीगर्गकाचार्यो ॥ युद्धंमेषात्सिंहधनुके ९ ॥ ५ ॥ युद्धस्थानानि ॥ युद्धंमकरात्कन्यावृषभे ॥ १०
६ ॥ २ युद्धस्थानानियुद्धंकर्कात ॥ कर्कमीन्यो ८ ॥ ४ ॥ १२ युद्धस्थानानि ॥ एषांयोगेनागतानांचचंद्रयोगाच्चदारुणं ॥ एवविधिनायुद्धंच
र्नते ॥ मिलनाद्भुगृहेग्रहेयुद्धंभवतिदारुणं ॥ अमित्रद्वंद्वकंयुद्धंक्षयंकुर्वंतिमेदिनी ॥ एवंविधिवार १ ३ ॥ वर्षं ४० ममस्मृत्यर्थायाच
र्मि ॥ यावत्सन्यासाचवर्मिता ॥ अस्मिन्युद्धेनवाराजारनवाप्रजा ॥ यस्यराशिभागेयेदेशानेदेशानिरीक्षणात्या ॥ तेभ्योयेचराजाय:
कथिता: तेचकुंभ ११ तुल ७ मिथुन ३ वायुविभागे ॥ मेष १ सिंह ५ धनु ९ वह्निनररविभाग ॥ एषांराशिमध्येग्रहस्यतियुद्धं ॥ वार १२ वृष २ म

कर १० कन्या ८ एषांविभागराशिशनैश्चरयुद्धं वार ११ तथाचंद्रलग्नराशिमध्येकर्के ४ दृश्चिक ८ मीन १२ एषराशिमध्येग्रहयुद्धंवार १२
एवंराशि: १२ मध्येयुद्धंवार ७० वर्षमहस्र १००० युद्धंभुक्तारयंति ॥ एषविधिममस्मृत्यर्थंमेघडंबरावनीक्षयंकुर्वंति ॥ श्रीगर्गकाचार्यो
वदंति ॥ यवायणे ॥ मेचकेपरचक्रेवादुर्भिक्षंशोरवेतथा ॥ अतिवृष्टिरनावृष्टिरित्यांत्यंतिप्रजायंप्रजा: ॥१॥ धृग्भृश्रयतां ॥ गुरुजन्मप्रवक्ष्य
मिशृणुपद्मप्रयत्नत: ॥ पूर्वसंवत्सरेप्राप्तेवर्तनंतेदेवहानिव ॥ सिंधुश्चपश्चिमेदेशेगुरुजन्मभविष्यति ॥ प्रथमचुक्रोदयुक्त ४३००० का
र्तिकमासेशुक्लपक्षेप्रतिपदायांशुक्रस्यसमेरपूर्वाषाढानक्षत्रेसूर्योदयात्पल ४५ दृश्चिवलग्नवहमानेस्वर्गात्त्रह्मास्वन: ॥ एषलग्न
वशात्वत्रहस्पतिभायुर्दाय ॥ कल्प १४ जीवति ॥ अनंतरंप्रवक्ष्यामिशृणुधृग्भ्रयत्नत ॥ सचराचरंभवत्सर्वंमेघडंबरावनीवेवत ॥ सं
वत्सरफलंवक्ष्येलोकानांसुखंचवर्तते ॥ उत्तमामध्यमावीमी अधमवीमी विशेषत: ॥ प्रभवादिकसंवत्सर: २० ब्रह्मादेवता ॥ द्वितीयकवीसी
२० विष्णुदेवता ॥ तृतीयकवीसी २० गुरुदेवता ॥ रुद्र: रुद्रमंदारात ॥ अधमविशोपक २० शृणुपुत्रप्रवक्ष्यामिषष्टिसंभवादय: ॥ य

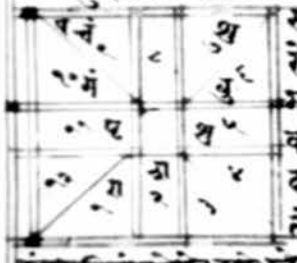

स्यज्ञात्वाप्रभावेनलोकानांशुभंदृतवे ॥ बहुतोयाननामेघावहुसस्याचमेदिनी ॥ बहुक्षीरघृतागावोमेदिनी
रोगवर्जिता ॥ संग्रामेजायतेभंगंप्रभवेवत्सरेभवेत ॥ सुभिक्षंसर्वधान्यानांजायतेनात्रसंशय: ॥ ऋक्षिक्षं
भमारोग्यंसर्वदेशेषुचोत्तमं ॥ का रेचभवेन्मेदंपाषाणावृष्टिपर्वते ॥ २ ॥ बहुसस्यकराभूमिरोगमाद्य
वर्जिता ॥ हृष्टाजनपदालोकाविभवेवत्सरेभवेत ॥ ३ ॥ भयविमुक्ताएथिवीनिर्वैराधरणीभुज: ॥ ऋक्षेभमे
दमार्यांतिप्रजाल्लोभाभाग्यसंयुता ॥ ३ ॥ उन्मत्तंचजगत्सर्वंधनधान्यसमाकुलं ॥ निरोगसुदितालोकाबहु
तोयाचमेदिनी ॥ सचिन्नभव्यराजानोप्राज्ञापत्येचवत्सरे ॥ ४ ॥ उन्मत्तंचजगत्सर्वंधनधान्यसमाकुलं ॥ नित्योत्सव
हंचमुदितंप्रभेदेवत्सरेभवेत ॥ ५ ॥ नित्यानंदपरालोकाश्चित्रयोवनगर्विता ॥ नित्यंसर्वगृहेसौख्यंअंगिरसचवत्सरे ॥ ६ ॥ सप्तद्वीपा
वतीपृथ्वीधर्मात्मा: शुभोभवेत ॥ वर्धतेसर्वधान्यानिश्रीसुरेवश्रीसुखाप्रजा: ॥ ७ ॥ एकपादंचदुर्भिक्षंमहद्वैरंभवेत ॥ बहुक्षीरघृतागा

वादेनोधनंप्रचुरंभवेत्॥८॥महर्घेजायतेसस्यंक्षयंयातिगवांतथा॥किंचिच्चमर्वदेशेभ्योभवेच्चैवतुवत्सरे॥९॥महर्घेजायतेसस्यंतत्रनैरुग्यतंतथा॥प्रजायोजायतेस्फीतिस्सुकल्केनसंशयः॥१०॥क्रियमाणेमहायुद्धेमोक्षंयातिनरश्चक्षयंभवेत्॥श्वेतान्यान्यदेशेभ्योयुवा संवत्सरेणतु॥११॥मेदिनीपूरितासर्वाआरोग्यंनयतेजनः॥दुंदुभिः सर्वदाज्ञानिधान्यलाभश्चभवेत्॥१२॥पश्चिमेचभवेद्व्याधिरसरोगेषुक्षीयते॥सभिक्षंतेनमारोग्यंकार्पासंचमहर्घता॥१३॥लवणंमधुमद्यानिमहर्घाण्यंभवेत॥उत्तमपथस्थायेलोकास्त्रचक्रेणविनिर्गताः॥१४॥सस्यपतिबहुधान्यंभवेत्सस्यरूपेतंक्षेमंभवतिचलोकस्यांतश्चिन्तानरेंद्राः॥धनकणसुसम्पद्भिर्व्याधिरोगैर्विमुक्तंभवतिहितुरुक्तंदेवरोगाहिनाशे॥१५॥बलवल्लकृष्णसस्याथोविनश्यतिप्रमाथिते॥तथावंध्याचदुर्भिक्षंबगलेलूषिनश्यति॥१६॥गौडेविप्लवेकाश्मीरुविदर्भेचैवकारण्ये॥कन्यकुब्जानगेत्तानांगंधर्वेरुत्पलाक्षाच॥१७॥एकचक्रावलाकाचकामकोटनथानंतनगरंपाटलिपुरंतथाइंद्रपथांवरं॥१८॥कुवारंकरहाटंचमहर्घोविक्रमेभवेत्॥१९॥पापप्रमार्थिहृषविक्रमोचसप्तसिक्षटोरोगभयप्रदोच॥श्वेतंचतुर्थस्यसुगस्यपूर्वस्यांचित्रभानुंकथयंतिवर्षं॥२०॥मध्येहिनेयंचक्रभानुमंज्ञेरोगंषदंसस्यकरंततश्च॥२१॥बर्बरंमालवेंद्रंचसचक्रेणक्षयंगतं॥समुद्रवेलाकुलाज्ञेयाअसौम्यासर्वशुभयो॥२२॥सक्षिप्तंजायतेलोकेवर्षतेसंवत्सरेतले॥राजानोनयतीताश्चसभानुश्चित्रभानयोः॥२३॥पोपालासमोराष्ट्राचिनश्यंतिविशेषः॥नसरोगानसाश्चायु[illegible]प्रचलोभवेत॥२४॥अल्पक्षीरद्रुतागावोअल्पपुष्पफलद्रुमाः॥सस्यानांनाशनंचैवअल्पवृष्टिविनिर्दिशेत॥२५॥कपालहस्तादृश्यंतेसक्षुधयापरिपीडिता॥हाहाभूतंतथाज्ञेयंनरगांमादिभक्षणं॥२६॥सोराष्ट्रेचतथाकच्छेवनवासेचसिंहले॥तत्सर्वंचभवेच्छ्रांतासमाणंसमादिशेत्॥२७॥स्त्रियोगर्भेनगच्छंतिअन्योन्यंचप्रवर्तते॥एतत्सर्वंचदृश्यंतेतारणेवत्सरेस्मृत॥२८॥तारणंतदनुभविष्यादित्यन्यदेशेषुउच्यतेमंत्रेण॥उन्नतापतथामेघानसुंचतिजलंबहु॥२९॥धान्येषुधश्चसर्वंणिनदृश्यंतेकदाचन॥३०॥गुर्जरेभयतंकानिपीडितामानवाभवेत॥सोराष्ट्रेलाटदेशेचदुर्भिक्षंपार्थिवंभवेत॥३१॥दुर्भिक्षंजायतेघोरंसर्वोपद्रवसंयुतं॥

379
1941

भूपश्चाप्रचुरान्नेयाध्यंवत्सरेतु॥१॥गंगायांसागरेचैवमानवाधिराभवेत॥अग्निवंगमनउरेचपाषाणेनविनश्यति॥२॥उन्नमावर्षतेमेघास्सर्वंदस्यवर्षते॥दृश्यंतेसर्वधान्यानांभवेत्संडाकलिंगके॥३॥इतिउन्नमवार्मफलंश्रीभार्गवायेणकथितं॥॥दक्षिणेचमहायुद्धंगंगपश्चिमपर्वते॥सर्वेविद्धस्सरप्राप्तेसिंधुदेशेभयंभवेत॥४॥दृश्यंतेनिजलंलोकेहाहाभूतंचचराचरं॥मेघस्यादृश्यतेनत्रप्रचंडविद्युदुद्रेयाः॥५॥सर्वधान्यसुनिक्षंचसर्वधान्यंनसंशयः॥मरुदेशेभवेत्सीद्रेशेवस्यांनचविग्रहे॥६॥अमोरुवारथमालोकास्त्रीराज्यंचविनश्यति॥ब्राह्मणाचप्रवल्लाप्राक्ता आनर्षंनयतेजनः॥७॥निश्चिंतंमानुषाः कष्टमुदयास्तमनेरतं॥८॥विरुद्धंसर्वदेशेषुविग्रहेणप्रवर्तते॥विकृतेवत्सरेप्राप्तेसर्वबीजंसर्वविग्रहे॥९॥महामुंमुदगमंप्राक्तदृश्यांचविनश्यति॥सिंधुदेशेचदुर्भिक्षंनेक्षयंयातिमानवाः॥१०॥प्रजासर्वंप्रपीड्यंतेनस्थानेस्थानेचपुत्रक॥अक्षिरोगंभवेद्रोगंतेनार्यंचप्रचुरंभवेत॥११॥निश्चेहागानुषाश्चैवसर्वदेशभयंभवेत॥उत्तरापश्चिमेकेपिहृयंतेनंदनाः प्रजाः॥१२॥प्राचीपश्चिमयोः सर्वापरचक्रेविमंस्थली॥पीडिताश्चप्रजास्सम्याः स्वरेभंवत्सरेगते॥१३॥स्वस्थचमभवेद्वुचव्याधिरोगाविवर्जिताः॥बहुधान्यसमायुक्तानंदनेनंदिताप्रजाः॥१४॥किंचिच्चदक्षिणंपंथेरक्तवातःप्रवर्तते॥अल्पतोयास्वल्पमेघावर्षतेसंडमंडले॥१५॥सिंधुदेशेभवेद्रोगंगेहकंथानथैवच॥नश्यंतिसर्वसस्यानिविजयेनात्रसंशयः॥१६॥मरुदेशेमहाकष्टंदुर्भिक्षंविग्रहंमहत्॥पारखंडानांजयोनास्तिषट्दर्शनमेवच॥१७॥अष्टादशभवेद्वर्णापीडिताजयवत्सरे॥पूर्वेदिग्भागेनश्यंतिपरचक्रेणपीडिताः॥१८॥व्याधिरोगसमायुक्ताःसदाज्वरसमन्विताः॥राजानश्चंडमार्गेभिअन्योन्यंचनगृह्यते॥१९॥अभिभूतंजगत्सर्वंमध्यंतेनवत्सरेगते॥२०॥परचक्रागमंचैवसिंधुदेशेचविग्रहं॥पाक्यंतेसर्वसधान्यानिदुर्भुरेवःपीडिताःप्रजाः॥२१॥गम्युष्यानिदृश्यंतेलोकाःसमसंज्ञातिसंज्ञाय॥२२॥अयोध्यांउत्तरापंथेहमलिंगेचदृश्यते॥अतिवृष्टातेप्रजादुःखंराजदुरुक्तंतथैवच॥२३॥(अयोध्यांउत्तरापंथेंदंगलिंगेचदृश्यते॥) हाहाभूतंजगत्सर्वंमर्थहानिर्विलंबिके॥नत्रंगंगातिसारश्चस्वचक्रेपास्वचक्रता॥२४॥पश्चिमेपूचयदृश्यंतेभयंभवेत॥विषमस्थंजगत्सर्वंविविधोपद्रवसंयुतं॥२५॥विक्रांतिकेपिनाजीवाममवाक्यंचनान्यथा॥दक्षिणलोकंसमुद्दिश्यसत्यंभवतिनिश्चितं॥२६॥पर्वतेप्रालंबनेमेघाअतियुद्धंचवत्सरः॥तस्करैर्जनसंभूतंदुर्भिक्षं

सर्वमेवच॥ २७॥ मेघवायमुनालोकाःपरचक्राद्विनश्यति॥ मारेष्ट्रजायतेपीडाद्विष॥ ईरेशमेधवे॥ २३॥ ऋक्षितंचसुभिक्षंदक्षेरे
ज्ञायतेभिक्षं॥ द्रुवेचसुविनाःप्रजाःसवर्णधनधान्यानिजगत्सर्वेप्रहर्षितं॥ २४॥ ब्राह्मणाश्चाथमंतुष्टाउदितास्तमयंक्रमं॥ राजा
तुष्टोभवेद्व्याङ्गनकृतेऽरोगनाःप्रजाः॥ २५॥ उन्नगःपथिकाश्चौरायेतिशीतिर्विनश्यति॥ आरोग्यामानवाश्चैवबहुसोख्याश्चमे
दिनि॥ २६॥ अंतर्वधमरुद्देशमहर्घंधनधान्यतः॥ रोगभनेचत्सरेप्रायेपन्नगाःप्रचुराभुवि॥ २७॥ विषमस्थंजगत्सर्वंव्याकुलंसर्व॥ चरा
चरं॥ राष्ट्रभंगंप्रजापीडाभिंधुदेशेचमध्यमं॥ २८॥ स्थानच्यालप्रजाःसर्वाःक्रोधक्रोधपरायणं॥ हाटकमहर्घतांविप्रसर्वधान्यसम
न्विता॥ २९॥ कुरुक्षेत्रंचकुरुक्षेत्रमहर्घंचन्नवियदं॥ पश्चमेचार्तिवासंचउदंडपवनाहतं॥ ३०॥ विश्वावसुभवेत्कीर्तनक्षत्रपरीतिमा
नवाः॥ राजानोराजपुत्राश्चसेनाश्चनथैवच॥ ३१॥ संग्रामंविनिवर्त्तेनपीडितालोकसंस्थिता॥ स्थानभंगंचजायेतवत्सरेचपराभवे
॥ ३२॥ इतिश्रीपवायणमध्यमविभीषिकथिता॥ विष्णुदेवता॥ अथमविभीषिकाचार्योवदति॥ ॥ प्रजानांचक्रुधः क्रूरांपूर्वगेवत्सरागम
ते॥ रोगमदंडाहलंदंडायहेन्यांविनश्यति॥ ९॥ किंपुनश्चान्यधान्ययोःउद्दीयाणंकीणीरदंडांकीतिचविनश्यति॥ १॥ सभिभेसेममा
रोग्यंदंडांश्चभयवर्जिते॥ मौम्यदृष्टिभवेद्राजामोरव्याअमरतीर्थगा॥ २॥ स्थानेस्थानेचजास्त्राणिमुदितायोद्धविर्जिता॥ एतत्संव
त्सरेप्रायेकालेनूणपुत्रक॥ ३॥ सिंधुदेशानथाकंठमरुदंडांश्चतुर्भुजं॥ भयत्रासंप्रजापीडापरचक्राद्विनश्यति॥ ४॥ सभिक्षंचसुखं
विनंमंचारूढेभवेन्नरः॥ दक्षिणेउत्तरेवापिमानवाधिगमंतथा॥ ५॥ सौम्येभवेत्सरेप्रायेनोयपूर्णाचमेदिनी॥ साधारणेचसरेप्रा
प्तेजलमस्यबकीनयः॥ ६॥ चैणेमेघानवर्षंतिसर्वधान्यमहर्घता॥ सौम्यकालेभवेद्व्याविधाप्रमर्षनेप्रजाः॥ अथयमुनायांचगो
ऽचदुर्भिक्षंदारुणंभवेत्॥ अभिभूतंजगत्सर्वेक्रूराश्चविविधोभवेत्॥ ८॥ गंगातीरेचकावेर्यांचचाक्रदुस्तंभवर्त्तने॥ अन्यत्रसस्य
समृद्धिःपरिधाविप्रहरणंक्रोणेचविग्रहं॥ ९॥ मालवश्चप्रचंडोत्रचाग्रयानःप्रवर्त्तने॥ दक्षिणेपश्चिमेचैवदिग्भागेजलनेनदा॥ १०॥
वाराणस्यांतथागौडदक्षिणेचान्नदुस्थता॥ प्रमाथोमकलाभूमिराजविग्रहमेवच॥ ११॥ प्रजाश्चव्याकुलीभूतामाधवःसंडमंडले
भगुस्थानेचयेलोकाव्याधिरोगप्रपीडिता॥ १२॥ इलादुर्गपुरासाणंविनश्यतिनसंशयः॥ गच्छंतिसर्वेमस्यानियदूरमाश्वमद्

381
1941

घना॥ १३॥ रक्तपुष्पबलानाशः विक्रमंनंदवेल्लोकाः॥ सर्वदेशेषुमहर्घितः चित्रयूटदूणमहर्घंदेशाविग्रहं॥ १४॥ देशेदेशेमहर्घाणिमा
धवःस्वल्पतोयदाः॥ सर्वधान्यप्रजापीडासोरांष्ट्रचनसंज्ञाय॥ १५॥ अयुस्तोनभवेन्मेदंमाधवंगुर्ज्जरंतथा॥ लाटदेशंसिंधुदेशं
विदर्भाविध्यपर्वते॥ १६॥ दुर्भिक्षंजायतेघोरंलोकानांमरणप्रदं॥ पिंगलेनुमदृष्टिःस्यान्चोराकुलितमानवाः॥ १७॥ श्वासका
सहनुःकंपःपीड्यतेमागधाजनाः॥ दुर्भिक्षंजायतेघोरंसधान्यमहर्घता॥ १८॥ पार्थिवाश्चाबलाभूमिनित्यंपीड्यंतिज्ञातिजाः॥
दक्षिणेउत्तरेपूर्वेमुत्तरंचचराचरं॥ १९॥ कालयुक्तेनुमरणंमनुष्याश्चयतेसदा॥ अनेकदोषदःकालयुक्तःसर्वस्यसर्वदा॥ २०॥ उ
दपूर्णानवेन्मेघाबहुधान्यजनंवनं॥ मेदिनीहर्षिताःसर्वासिद्धार्थंचनसंज्ञाय॥ २१॥ बर्बरेपंचगौडेचगुर्ज्जरेचविशेषतः॥ कन्य
कुब्जेकलिंगेचमुरजाणंचनश्यति॥ २२॥ दुर्भिक्षंदृश्यतेलोकेव्यवहारेनप्रवर्त्तने॥ खंडवृष्टिभवेन्मेघोमेघोविग्रहंसदा॥ २३॥ पश्चि
मेदेशमार्यांचैरोद्रैरोद्रंप्रवर्त्तने॥ नलपिंगलिनोज्ञेयंसंपूर्वंचविस्मृतं॥ २४॥ इदानींदृहलिखितमस्ति॥ नलपिंगलोसमायातो
दंडानंगनसंज्ञाय॥ दुर्भिक्षंजायतेघोरंधान्योपधप्रपीडिता॥ उदयास्तमनेलोकापीड्यंतानलवत्सरे॥ २५॥ श्रीमंतस्करकाजेया
विग्रहिष्यंतिदेशाकान्॥ पिंगलेवत्सरेप्राप्तेदंडानंगनसंज्ञाय॥ २६॥ अथदुर्गतिः॥ चलचित्ताःप्रजाःसर्वाविमतिःपरिपीडिता॥
अन्यवृष्टिंसमेघादुर्मतावत्सरेसदा॥ २७॥ युगाणेमहायुद्धेअनिवृष्टंप्रवर्त्तने॥ कस्मिन्स्थानेभवेन्मेघाकस्मिंस्थानेनवर्षति॥
॥ २८॥ मृषकाकर्कराव्याधिदुर्भतोचनसंज्ञाय॥ आनंदकरोभवेल्लोकासर्वेषड्वसंयुता॥ २९॥ गीतवाद्यरताःसर्वेदुंदुभिःप्रजा
अथरुधिरोद्गारी॥ मरुदेशेचदुर्भिक्षंमलयारेनसंज्ञाय॥ ३०॥ अल्पवृष्टिभवेन्मेघोराजानःसंधिविग्रहः॥ परस्परंचभूपालारुधि
रोद्गारीचभूमिजा॥ ३१॥ भिल्लदेशंचकर्णाटंबल्लपंचिवभासनं॥ दुर्भिक्षमुद्वतालोकाःपाषाणैर्म्रियतेसदा॥ ३२॥ मेदिनीशुष्य
तेलोकासर्वसस्यंविनश्यति॥ पापाःप्रचुरतायानिसंग्रामंपितृपुत्रयोः॥ ३३॥ रक्तावत्सरघोरेरुभिक्षंसिंधवेभुवि॥ सर्वेवेला
कुलंनियाक्रमुदस्यविनश्यति॥ ३४॥ राजमरणंचदुर्भिक्षंविविधोपद्रवर्युतं॥ स्वर्गमर्त्योचपातालयुद्धंभवतिचनश्चितं॥ ३५॥

विग्रहेगौरवंगेद्वेकोधनिक्रोधसंयुतं॥३६॥अथक्षयः॥सर्वदेशेमहापीडाजन्मर्क्षेराहुनिक्षयंभवेत॥पर्वनामेदिनेभंगेसंवादेचग
हरहे॥३७॥राज्ञोभंगंचदुर्भिक्षंमरणंचापदंतथा॥सौराष्ट्रेत्वादेशेचमाल्यंवंकाकणंतथा॥३८॥दुर्भिक्षंजायतेघोरंभयभंगोद
शोदशा॥क्षयेसंवत्सरेप्राप्तेक्षीयतेसर्वमेदिनी॥३९॥सिंधुदेशेमहर्घंचमहर्घंजनपदानिच॥४०॥इतिश्रीरोमकाचार्यो
णकथितंसंवत्सरफलं॥॥इतिअधमविसारदुर्दिनना॥॥क्षयेचक्षीयतेविप्रावृद्धिंप्रयांतिकर्षुकाः॥नथैवविद्धशूद्राणा
परस्परहताचवृद्धिदं॥१॥धूम्रश्रूयतां॥पुनरेवप्रवक्ष्यामिग्रहजन्मप्रकीर्तिते॥मरणंभानुनायुक्तासोमेचिंताप्रकीर्ति
ता॥२॥कुजेनवोजनंराशेलाधनिशाचंद्रदहने॥गुरोचोत्तरफाल्गुन्यांशुक्रेज्येष्ठाप्रकीर्तिता॥३॥रवतीसूर्यपुत्रेणजन्मऋ
क्षाःप्रकीर्तिताः॥राहुमित्रगतंचंद्रंदेशभंगंनसंशयं॥३॥जंबुद्वीपेत्यचाकाशेकोटिपंचाशानित्यशः॥भ्राम्यतेमंडलेसूर्यं
समेरेरेकधारिणं॥४॥ग्रहजन्मचुरोषुमित्रेषुउदयास्तमनंतथा॥वक्रमार्गातिचारंचयुद्धंभवतिखेचरं॥५॥ग्रहणंजन्मऋक्षे
षुऋक्षंकर्मनकारयेत्॥विवाहेषुचयेथ व्यंप्रवासेमरणंध्रुवं॥६॥विद्यारंभेचमूरंवेत्यं कृषिवाणिज्यनिष्फलं॥ग्रहभंवेद्
भवेद्दाहोवादनबंधनमेवच॥७॥जन्मनक्षत्रमस्तावान्यग्रहाणांतुऋभाऋभं॥तिथिनक्षत्रयोरोगोमकाचार्योवदतिश्रुणु
ष्वप्रयत्नतः॥चंद्राक्षंकमितितिथिंत्रयमितेमूलेधनिशेत्तरापोष्णंपुष्यकरेतथाश्वमभितिश्रेष्ठंमतासिद्धयं॥नेष्टंयाम्यम
घेचतुरंशदिनेंधष्टविशाखात्रयंतद्भुयमितिसप्तमीनऋक्षदात्रेकादशीहस्तदशी॥९॥रविः॥चंद्रस्याद्दशमीऋभायशतभं पु
ष्योदितीयानवमेऽर्कवैद्यवसाहिण्यायुगमभीष्टाथांत्यकीर्तितं॥नाथोऽपिचमनमीनऋक्षदात्रित्रविशास्वाभिजिन्न
क्षादशयपिनोऽऋभानिगदितादादशयनेगाभिधा॥॥चंद्रः॥भोगेव्यमुलायंचतिथिः षष्ठीजयाख्यातेथाभ्येयापिचरू
निकाऋक्षफलामूलंचमित्रंध्रुवं॥वर्ज्यंमित्रंधुनाम्नवचयमुभेभार्द्रेनगथाऽर्केतद्वन्मतिपच्छुभायदशमीनेशतथैकादशी
॥३॥भौमः॥सोम्येमित्रंकरेनऋाधिपतिभंभद्राचयंकृत्तिकारोहिण्यंगिरमर्क्षवैष्णवयुताश्रेष्ठानुराधाकरं॥नित्यंनक्षत्र

वासरेप्रतिपदामार्द्रंचपोष्णत्रयंनोभंशनवमीचनुर्दशीदिनंसर्वंजयायामिद्विषु॥४॥बुधः॥पौष्णाद्वंहस्तभंशरंगुरुरिंमेपूर्णातथैकादशी
आदित्यंहिविशाखयाहिगुरुभंपूषानुराधाकरः॥मन्याज्यंज्ञाननारकंदहनभंयष्ठीचतुर्थ्यष्टमीप्राजापत्यमृगाश्वफानभुभराचाद्रांथ
भद्रात्रयं॥५॥गुरुः॥शुक्रोमित्रिद्विषुनवमऋक्षतिकरोनंदासहानंगयाश्वीफाल्गुनिकाथपौष्णभमुभानिमेतथाषाढभं॥ज्येष्ठानिष्ट
करंहिमघकृतिथीपुष्यत्रयंरोहिणीतद्वन्मैत्र्यनयाशुभायगदितास्क्रात्रयंसिद्धये॥६॥शुक्रः॥श्रोनस्कारिद्रानामघाश्लातिषय
करिकात्रयंचाश्मभित्रंमाऋनवैष्णवादितियुत्मद्वोहिणीरोहिणी॥नेष्टंपौष्णकरः भंगचन्द्राग्निभेथर्क्षतथामत्स्यमीनाषाढद्वयम
थोनशुभदापूर्णाशुभेकर्मणि॥७॥शनिः॥शत्रुमित्रगतंचन्द्रंदेशभंगंनसंशयं॥जंबुद्वीपेपंचनाऋाणांकोटिपंचाशानित्यशः॥
भ्राम्यतेमंडलंसूर्यंसमेरुमेकधारिणं॥ग्रहजन्मचुरोषुमित्रेषुउदयास्तमनंतथा॥वक्रमार्गातिचारंचयुद्धंभवतिखेचरं॥ ॥अ
थातःसंप्रवक्ष्यामिशृणुभूपप्रयत्नतः॥येनबुद्धिविपाकेनक्षयंकुर्वंतिखेचराः॥१॥ग्रहचक्रेषुज्ञातव्यंत्रैलोक्यंसचराचरं॥एवं
ग्रहनिष्फलंसर्वंग्रहयुद्धंतिखेचराः॥२॥रविर्मंगेगुरुः सिंहेमिथुभौमतुलेशनिः परस्परंमहीपालयुद्धंभवतिदारुणं॥३॥कर्कंचंद्र
स्थितोथभौमसहितः कन्यागतोभार्गवः॥सिंहेचत्रिदशाचार्यः शनियुतोराहुथभौमागतः॥राहुर्वृश्चिकधन्विनागुरुतुलेशुभस्थसो
मिभंवेत्॥नृपतिंछत्रथभंगमाशुभवत्साधुर्ध्यतेनेक्षणे॥कुलेकुंभेयदासोमिभथुनेमीनमंगले॥मकरेजीवरविभेंद्वभयंचात्र
वसंधरां॥५॥गुरुरंगालवंद्राणवज्रवासेचसिंहले॥सौराष्ट्रेचतथालंकायस्मिन्योगोविनश्यति॥६॥मेषेजीवक्षमापुत्रमकरेसोमि
वर्त्तने॥जगत्सर्वंभवेत्तीव्राभयंयुद्धंप्रवर्त्तने॥७॥नमोदृश्चिकधनुर्वापिगुरुसोमिसमन्वितः॥उदयास्तमनेवापिव्याकुलंमचरा
चरं॥८॥एषुयोगेषुविरत्यांतमरुद्रांचवत्सरं॥संधयंयमनाख्यंचविनश्यतिनसंशयं॥९॥धनेशुक्रक्षमापुत्रोकुंभेसोमिनिरी
करः॥राजपुत्रस्यवैयुद्धंभयंसर्वंचसंधरा॥१०॥हसीजाणभूमिस्थानंबलदृकुंकणकोशलं॥अस्मिन्योगेविनश्यंतिपातालंअ
मरावतीं॥११॥परचक्रमकरेजीवेमिथोसोमिराहुनेक्षवे॥वर्त्तनेव्याकुलासर्वेक्षयंयातिवसंधराः॥१२सौराष्ट्रंसिंधुदेशंपश्चि

मंडूदयेचले॥ विनश्यतिनसंदेहोदेहोनिर्लंगभवेच॥१३॥ वृषेमर्यस्मनोभौमराहुकन्याचभार्गवः॥ पृथिव्यांविग्रहंसर्वेअन्यवि-
ग्रहंनवेच॥१४॥ समरकेंदद्वयोरोममेदपारकदक्षिणा॥ अग्निनयोगेविनश्यंतिमिथुनराजाविरोधः॥१५॥ राहुकुंभेधनेभौमेमेषे
भौमशनैश्चरः॥ निश्चितंयुद्धसंग्रामं अग्निग्रामंचवर्त्तते॥१६॥ काश्मीरेचकलिंगेचयमुनायांपंचगौडके॥ एषदेशभवेत्सीघ्रा-
यगछंतिमानवा॥१७॥ राहुजीवसितश्चंद्रवृषेरश्विकसंयुते॥ प्रजापीडामहायुद्धं अग्निदाहंचवर्त्तते॥१८॥ पांचालाचमागधा
श्चस्त्रीराज्यंचापिदक्षिणे॥ सिंधुपश्चिमदेशारोपरचक्रविनश्यति॥१९॥ कुंभेजीवोधनेराहुर्मिथुनेभौमोथभार्गवः॥ विग्रहःपर-
चक्रेणभयंचक्रेणविनश्यति॥२०॥ बबकाणंगुआभीरंमत्स्यनाभंहिमाचलं॥ कलंदेशोभवेद्युद्धं अग्निनृपेणविनश्यति॥२१॥
भूमिपुत्रगुरुश्चंद्रकुंभेकर्केतिदारुणं॥ राहुदृष्टयुतेवापिभयंसर्ववसुंधरा॥२२॥ भानुभौमतमःसोमिकुंभमकरहरिस्थथा॥
मेषसूर्यंचपुत्रेवाक्षयंकालेप्रवर्त्तते॥२३॥ एषयोगमहारंगासिरिनाख्यावभुक्ष्यते॥ अंगदेशमर्वदेशंसिंधुदेशंमध्यमं॥२४
कन्याशुक्रगुरुःसोमिवृषेभौमतुलेनगः॥ विग्रहंचप्रजापीडाअग्निरोगप्रवर्त्तते॥२५॥ मागधं॥ मालवंमलदेशंचनागलाकंत
थैवच॥ विनश्यंतिनसंदेहातुरंगजपक्षिणः॥२६॥ वृषेसूर्यनिशाकरंगभूमिपुत्रोथभानग॥ राहुधनुषिचायुकेपरचक्रं
विनिर्दिशेत्॥२७॥ मिथुनेजीवारविश्चंद्रावृषेसोमिचभार्गवः॥ वृश्चिकेचतनेराहुःक्षयंसर्ववसुंधरा॥२८॥ पर्वताद्रुमरक्षस्यतथा
सागरपर्वता॥ कर्कंतिग्मेयोगेनसिंधुराजाविनश्यति॥२९॥ तुलायांचभवेद्योगमग्नेसोग्निप्रवर्त्तते॥ कर्केचंद्रेमंत्रीक्षयंकालेवि
निर्दिशेत्॥३०॥ सोराष्ट्रेसिंधुदेशंचकुरुक्षेत्रंचकुंकणं॥ अग्निनयोगेविनश्यंतिक्षयंयांतिवसुंधरा॥३१॥ राहुशुक्रसमापुत्रक-
र्कंघरनुघटस्थथा॥ विग्रहंकुलनाशयोगंचभयंसर्वविनिर्दिशेत्॥३२॥ सूर्यंसूर्यसनोवापिमिथुनेकन्यकेपिच॥ वृषेकुंभेगनोरा
कुव्याकुलंसर्वमेदिनी॥३३॥ पितृपुत्रभवेद्युद्धंयंमवारंचग्रहेग्रहे॥ एषयोगमहाशून्यागंगायमुनसंज्ञकं॥३४॥ मृगेजीवासितःक
न्याधनेराहुश्चनैश्चरः॥ परस्परंभवेद्युद्धंखंडखंडेचवर्त्तते॥३५॥ मिंहेराहुरविःशुक्रोमेषेसोमिगुरुस्थथा॥ म्लेछेचभज्यतेसर्वं
उदयास्तगनंध्रुवं॥३६॥ यस्मिन्योगेचविरव्याताज्ञाताज्ञातलयामिनां॥ समाणंचमहाशून्यंतथाद्विउसंभवः॥३७॥ मीनचं

385
1941

द्रगुरुःशुक्रनृपेसोमिचमंगलः॥ चचालमंभवेल्लोकेविग्रहंदारुणंभवेत॥३८॥ सिंधुराजाभवेन्मत्स्यंदेशभंगस्तथैवच॥ विग्रहंरोरवंव्या
धिमन्यदेशाविनश्यति॥३९॥ सेवापद्रुवलोकानांविग्रहंधान्यसंग्रहं॥ कर्केराहुरविःकोडमीनेसोमिचहस्पति॥४०॥ देशभंगंमहा
युद्धंप्रजाविग्रहमेवच॥ सिंहेसूर्येचपुत्रेवराहुभौमश्चभार्गवः॥४१॥ विनिर्गताश्चलोकाश्चविग्रहंकुरुतेसदा॥ कन्याभौमरविः
सोमिवृषेचंद्रेचहस्पति॥४२॥ कन्याकुलुकलिंगेचसंधवंयमुनातटं॥ केदारंचहिमाख्यानंगुर्जरंचविनश्यति॥४३॥ युग्मेशो
नेक्षसापुत्रतुलेकुंभेदानिस्मथा॥ राजयोगःकरःसिद्धःसिंधुदेशंविनश्यति॥४४॥ मीनकन्यागतःशुक्रवृषेसिंश्चगुरुस्तमः॥ कर्केसू
र्यपुत्रश्चमहायुद्धंप्रवर्त्तते॥४५॥ गोडदेशंचबंगालंभगुदेशंचकुंकुणं॥ किंकिरामलयास्थानंपूर्वदेशंविनश्यति॥४६॥ सिंधुराजा
प्रधानश्चभग्निनयोगेविनश्यति॥ गुरुश्चक्रपराधान्यंसिंहेराहुश्चवर्त्तते॥४७॥ राहुक्षितिजमंधरुछोभयंभवतिविग्रहं॥ वृषस्छो
सूर्यमंदोचमकरेगुरुभार्गवा॥४८॥ युद्धंभवतिराज्ञांचभयंसर्ववसुंधरा॥ सिंहराजाप्रधानस्थागुर्जरेसुखिनस्तथा॥४९॥ सागरा
श्रितानचयस्लोकाक्षयरोगोविनश्यति॥ शुक्रश्चसूर्यपुत्रश्चराहुक्षितिजचंद्रमाः॥५०॥ पंचबाणेमहायुद्धं शून्यंकृतिमेदिनी॥ चंद्रभो
मसितार्कस्थमेषेसिंहेचवर्त्तते॥ गजपुत्रसमस्नानांयुद्धंभवतिदारुणं॥५१॥ नेपालंकालकाश्मीरंस्तुरासाणंचमालवं॥ आनंदं
रवशोरंचअग्निनयोगेविनश्यति॥५२॥ कुंभेशुक्रेरविःकोडतुलजीवोनिशाकरः॥ दुर्भिक्षंसर्वलोकानांविग्रहंकुरुतेसदा॥५३॥
मिथुनस्छोमहीपुत्रसूर्यपुत्रेणसंयुतः॥ कुंभेचत्रिदशामंत्रीविग्रहोरोरवंभवेत्॥५४॥ कामारव्यामागधासिंधुद्विरोत्रालंधरस्त
था॥ कौरासर्वोनराःपंथेविनश्यंतिनसंशयः॥५५॥ सिंहेराहुरविर्भौमेमेषमध्येबृहस्पति॥ धनेशुक्रगतश्चंद्रभयंभंगंविनिर्दिशे
त्॥५६॥ तुलस्थश्चिकमेषस्थोरविःशुक्रेणहस्पति॥ कन्यायांहिबुधोराहुर्विग्रहंसचराचरं॥५७॥ सिंधुदेशंसुरासाणंमाल
यंचहिमाचलं॥ अहिछत्रंगयावंध्याअंतर्वेदंविनश्यति॥५८॥ कुंभेशुक्रेकर्मीनेचगुरुर्भौमश्चनैश्चरः॥ युद्धंभवतिराज्ञांच
त्रासापीडाचदारुणा॥५९॥ राहुजीवबुधःसूर्यएकराशौप्रवर्त्तते॥ चाग्निप्रभवंयुद्धंसंग्रामश्चमहानभवेत्॥६०॥ तुलायांदेवमं

387
1941

ने॥ ९॥ सोरिमे ज्ञायतेभोमपंचमेनवमस्थिता॥ दुर्भिक्षंचभयंचअन्नपीडाभवेद्भुवि॥ १०॥ इतिश्रीयवायणेग्रहयुद्धसमाप्तं॥ ॥
अथसंवत्सरफलं॥ राशिगोचरफलं॥ रोमकाचार्योवदति॥ यदामेषमध्येगुरुर्भोम॥ कर्कमध्येरादु॥ तुलमध्येसूर्य॥ तथाचंद्रमेषम
ध्येमदीणविनश्यति॥ सिंधुदेशेतुरुकारविनश्यति॥ धामिणतथाएरावकुथापहारीविनश्यति॥ २॥ यदाऋश्चिकमध्येसोरि॥ तुला
मध्येराहुचंद्रभोमगुरुफेरूणचीणदेसथाराहुविनश्यति॥ ३॥ सिंकंदरु॥ तथानमाणु॥ साहिडानविनश्यति॥ सिंधुराजानतुरका
नविनश्यति॥ इविउनदापाराजादेशेपाषाणमेघवर्षति॥ ४॥ यदाकुंभमध्येगुरु आदित्यमंगल॥ धनमध्येशनेश्वर॥ सिंहमध्येराहु
चंद्रनदीपरूणचीणदेशेषापराहुविनश्यति॥ सिकंदरुतथाजमाणुसाहिडानविनश्यति॥ सिंधुराजातुरकानविनश्यति॥ इ
विडेशरेतवउपाहपोभरूचरभई॥ उनरदेशेविग्रहं॥ दक्षिणदेशेराजाद्वोहानविनश्यति॥ ३॥ यदामीनमध्येशनेश्वर॥ मिथुन
मध्येगुरुभोम॥ कन्यामध्येशुक्रराहु॥ ४ सिंहमध्येआदित्य॥ तदाखुरासाणंममलंडूमभवति॥ एकंदेशरेषापरंपरंपरेन॥ सिंधु
देशेविग्रहं॥ स्वचक्रेविनश्यति॥ उदी आण॥ आमारिविहारशून्याभवति॥ देवगिरिंद्रोहान॥ गोआन्तीरूपोशु॥ रुष्टिभवति॥ वरा
हमध्येगुरु॥ भोमशनिश्चरसिंहमध्ये॥ चंद्रआदित्यमकरमध्ये॥ राहुतदाषापरंपरंपरेनोमकुराणथायराहुविनश्यति॥ वग
हादुसमाण॥ वायुवाति॥ जालंधरशून्यं॥ गोरदेशेअन्तिविग्रहं॥ विनश्यति॥ यदा -- मध्येशनेश्वर॥ मेषमध्येआदित्य॥
शुक्रमीनमध्येमंगले॥ ऋश्चिकमध्येराहु॥ आरन्नगजद्रोहानविनश्यति॥ सिंधुराजाद्रोहानविनश्यति॥ इमिकोत्तरवज्जानीत्र
लयंयाति॥ मालवंषापरंपरंपरेन॥ कुंकुणदेशेआडूविनश्यति॥ ६॥ यदाधनुमध्येगुरुरुषभमध्येराहुकुंभमध्येमंगलमेषआ
दित्य॥ तदाखुरासाणंआत्ममध्येक्षयंयाति॥ हिंदुस्थानंद्रोहान॥ विनश्यति॥ सिंधुमध्येपरचक्रागमंभवति॥ हिल्लिसमुद्रं
क्षयंति॥ बब्बरपारिपडमई॥ आरमीणदेशे॥ मक्काराविनश्यति॥ यदाकुंभेशनिगुरु॥ ऋश्चिकराहु॥ कर्कशुक्र॥ सिंहभोम॥ तदासिंधुदेशेषाप
रतुरकानुविनश्यति॥ दुकालंभवति॥ अजाकुनिमाबाणवायुवांति॥ तिरकुनिआत्ममध्येविनश्यंति॥ श्रीपर्वणेअग्नीनोविनश्यति॥

389
1941

मार आदिदुकालान्तर्भीयंते॥ ८॥ यदामीनमध्येराहुगुरु॥ वृषभोम॥ कर्केआदित्यबुधशुक्रमंगलनंदमंगदमंक्षय॥ सिंधुदेशेआत्म
द्रोहेविनश्यति॥ हरवेषापरंपरंपरेन॥ एकजंघादुकालान्तविनश्यति॥ लाडदेशेतुरुकेरंपरेन॥ ९॥ यदाकर्केराहु॥ मेषगुरु॥ वृषभोम॥ धने
शनेश्वर॥ तदाद्वोरमसुडतुरुकेरंपरेन॥ सिंधुराजातुरुकेरंपरेन॥ १०॥ यदामीनशनेश्वर॥ कुंभेमंगल॥ मीनेआदित्य॥ मीनेआदित्य॥ मकरेराहु
नदासिंधुमध्येपरचक्रं॥ कुंकुणेपरचक्रंभगधदेशेतुरुकानविनश्यति॥ ११॥ यदामकरेगुरु॥ मिथुनेशनेश्वरशुक्र॥ मेषराहु॥ वृषेआदित्यतदा
सिंधुदेशेषापराघर्षणंभवति॥ हिंदुस्थानेडाहानविनश्य॥ हारलुआत्ममध्येद्रोहानविनश्यति॥ १२॥ यदाधनेगुरु॥ वृश्चिकेशनिबु
ध॥ मकरेआदित्य॥ मीनेशुक्र॥ सिंहराहु॥ तदासिंधुमहर्घपरचक्रंविनश्यति॥ गुर्जरानआत्मद्रोहानविनश्यति॥ काश्मीरेपरचक्र
णविनश्यति॥ १३॥ यदाकुंभेशनेश्वर॥ धनेआदित्य॥ मकरेशुक्रतदासिंधुराजातुरुकानविनश्यति॥ तिलंगेदेशेषापाषाणेमेघवर्षति
बंगालिंगानमरणंतुरुकानविनाशंभवति॥ अरमीणषापेरंपरंपरेन॥ इमषापरंपरंपरेन॥ सोरट आत्ममध्येविनश्यति॥ १४॥
यदामकरेगुरुभोमरवि॥ मीनेशनि॥ तदात्ममध्येषापाराजविग्रहं॥ सिंधुमध्येपरचक्रागमंलोहपुरतुकानविनश्यति॥ हेबसोरं
आत्ममध्येविनश्यति॥ चीणमाबणवायुवांतिचमंचनीनदीउछ्यंति॥ कुडमंकोडडूविनश्यति॥ १५॥ यदामेषेशनिमेघेरविमंग
ल॥ ऋर्केधनुमध्येराहु तदासिंधुराजाप्रधानंकरिवनोभवति॥ हिंदुस्थानेआत्ममध्येविनश्यति॥ श्रीकीमाणपाषाणेमेघवर्षति
हिलेमधुलिलटनेमम अचश्यन्यं॥ शिचस्थानुषापेरंपरंपरेन॥ १६॥ यदाधनुमध्येगुरु॥ मकरेरविशनेश्वरराहुतदाहिंदुस्थानंवि
नश्यति॥ द्रोहषापरंदशेअन्नविग्रहंकरोति॥ आत्ममध्येविनश्यतिमवल्लाकुलाक्षन्या॥ १७॥ इतिश्रीयवायणेसंहितं॥ ॥
रोमकाचार्योवदति॥ पुनःधूम्रःश्रयनं॥ इत्यग्निपरचक्रं॥ दुर्भिक्षंव्याधिदारुणं॥ सर्पमूषकायोसिंह॥ व्याघानस्करान॥ पितृपुत्रे
भवेद्वादंकलहंचगृहेगृहे॥ १॥ मातापुत्रंनमन्यंते॥ वधुनःस्वसरंतथा॥ २॥ स्त्रीगर्भंचनगृह्णंति अतिवासंप्रवर्त्तते॥ असद्दृष्टिभ
वेन्मेघाधान्यंसर्वंचशुष्यति॥ ३॥ आकाशेजलिनंदीप्तंभयत्रासंचमेदिनी॥ कंपितेभूमिनागंचमर्कटाप्रभवलाभवेत॥ ४॥ विप
रीतंभवेल्लोकेधूम्राकारंचवर्त्तते॥ स्थानेस्थानेभवेद्युद्धंनष्टेतीर्थंचजंगमं॥ ५॥ अतिरोगाद्भयंस्थीदुर्भिक्षंचातिदारुणं॥ मंत्रस्थं

भनमुच्चारंशाकनंनेवपठ्यति॥ ६॥एवंरूपेणग्रहयुद्धंज्ञात्वं॥ अथरोमकाचार्योवदति॥ मिथुनन्मकथयति॥ इतिश्रीपूर्वदूरे॥ अथ॥ श्री
निच्कंप्रवक्ष्यामिकुर्म्माकारंशुभंडितं॥ कृतिकादोत्रीणिनक्षत्र॥ मध्येकूर्म्मस्यसंस्थितं॥ आर्द्रादोभवेत्रीणिदक्षिणंकुक्षमाश्रित॥
मुखमध्येप्रकीर्तिता॥ स्वात्यादिनिभवेत्रीणिपश्चिमेपादमंस्थिता॥ ज्येष्ठादोतुभवेत्री णिपुच्छेकूर्म्मस्यसंस्थि
ता॥ उत्तराषीणिनक्षत्रायपश्चिमेकूर्म्मपादयो॥ श्रवनिष्यादित्रिनक्षत्रादुत्तरांकुक्षिमाश्रित॥ रेवतीत्रीणिनक्षत्रावामपादेनसंश्र
यः॥ पूर्वादोगणयेत्तान्तामुखंकूर्म्मप्रकीर्तिते॥ यस्मिन्नक्षत्रेगतोसोमस्तदंशस्यविनश्यति॥ कृतिकारोहणीसोम्यंत्रिपुत्रक्षेत्रा
नीस्थिनः॥ संकुलामेघलाकंपाकोद्योभंचचकोद्यकं॥ अहिच्छत्रंगयावंध्याश्चंतेवंधश्चमंस्थले॥ कर्णेकुक्षंप्रजायंतेमध्येदंशोविन
श्यति॥ आर्द्रापुनर्वसुपुष्यंत्रिपुत्रक्षेत्रानीस्थिते॥ वीरभूमिक्षमावंतिनामलीतान्नसागरं॥ कामरूपंवराटंचनेरंद्रमगधस्तथा
सरोवटंचनेवासंपूर्वदंशोविनश्यति॥ आश्लेषाचमघापूर्वात्रिक्षेत्रंपुत्रानीस्थिते॥ अंगवंगकलिंगश्चकोचीचंचकोद्यलं॥ उ
त्तराहल्लचिचाचत्रिक्षेत्रंपुत्रानीस्थिते॥ बर्बरंमालवंचंद्रचवनवासंचसिंहलं॥ तापीभीमंतथालंकाचिकूटंमलयास्तथा॥ श्रीपर्वतं
चकिंविद्धाविनाशंदक्षिणापथं॥ स्वातीविशाखवामंत्रंचत्रिपुत्रक्षेत्रानीस्थिते॥ कपवापविनश्यंतिसाराष्ट्रंकुतिमालवं॥ अचल
धराविनश्यति॥ ऋगुःकलंचकुंकुणं॥ संधंचंचतथामेकंसर्वमेवंविनश्यति॥ ज्येष्ठामूलंतथापूर्वात्रिपुत्रक्षेत्रानीस्थिते॥ परंते
नवुंदंकच्छंवंतिपूर्वमालवं॥ पार॥ सागरश्चैवसोवीरगुल्लाडसंधवा॥ अतःपुरंविनश्यतिस्त्रीराज्यंचविनश्यति॥ उत्तराषाढवस्तूंच
धनिषाद्यानितिष्ठति॥ युद्धेरातमरण्यामंमरदंशोमरस्तथा॥ पूर्वेस्थाने॥ पूर्वंचंद्रभागंचनथारुद्रयवेदिकं॥ मरुस्थलंविनश्यंतियेचा
न्यकोणसंस्थिता॥ वारणंउत्तराषूर्वात्रिक्षेत्रानितिचंतिते॥ उर्द्ध्वाणमूलस्थाने॥ बकुलकुंकुनकोद्यलं॥ जालंधरंचकाश्मीरंचंप
कांद्वारमेवच॥ ऊर्ध्वकर्णास्त्यानवक्त्रायेचान्येमेकपादुका॥ एतेदेशाविनश्यंतिउत्तरांकुक्षिमाश्रितः॥ रेवतीअश्विनीयाम्यंत्रिभि
क्षेत्रानिस्थिनः॥ गंगाद्वारंकुरुक्षेत्रंश्रीकंठह्लिनापुरं॥ विनश्यंतिचकोब्राह्मणीनिर्नेमुनिःपुरं॥ एवंप्रमाणकूर्म्मस्यधर्म्म

391
1941

संकीर्तितंमया॥ इतिश्रीवराहेणकूर्म्मचक्रं॥ रोमकाचार्योवदति॥ पृष्ठःश्रुतं॥ अथ॥ मंडलंफलंवक्षामिश्रृणुपुत्रक॥ विशारवा
हृत्तिकापुष्पोभरणीचमघाहयं॥ पूर्वभद्रपदंपुष्यंविषः॥ राशिसूर्ययोः॥ उल्कापातंचनिर्घातंभूमिकंपंतथैवच॥ प्रचंडमारुतश्चैवप्र
श्रणंसूर्यचंद्रयोः॥ पंचऋक्षेदिशोघातंविद्युत्तंवर्षणंयदि॥ तारकापतनंदृष्ट्वा अन्योन्यंचिन्महाद्भुतं॥ आग्नेयमंडलंपुत्रभिन्नऋक्षं
भवंतिच॥ भिन्नऋक्षेमहालिंगउत्पद्यतेक्षणंक्षणं॥ भिन्नऋक्षेमहालिंगफलंतत्रैववक्षामिकारणंश्रृणुपुत्रक॥ नेत्ररोगंभवंतीसारोभ
यंधान्यंतुच्छवा॥ अल्पक्षीरघृतागावोअल्पसस्याचमेदिनी॥ अल्पवृष्टिमहर्घंचअल्पपुष्पफलद्रुमा॥ क्षुधयापीड्यतेलोकासिंधवा
भिसुयामुना॥ बर्बराजलंधरंचवकरामर्वोत्तरापथं॥ तस्मिन्नुत्पातदर्शनं॥ इतिआग्नेयमंडले॥ हस्तचित्रातथास्वातीमृगोवाथपु
नर्वसु॥ उत्तराफाल्गुनीचैव अश्विनीसप्तमःस्थितः॥ यद्यत्रचलतेकिंचिद्वायव्यंतत्रनिर्दिशेत्॥ तस्मिन्नक्षत्रविकाराणितस्य
वक्षामिलक्षणं॥ महावातेनथावातिमहाभयमुपस्थितं॥ उन्नतापितथामेघानमुंचंतितथाजलं॥ प्रकाराणिचशृंगाणितोरणा
लयमेवच॥ वायुवेगाविभूतानिपतंतिचधरातले॥ दिवाविश्रामंतथाराजारक्षाश्चापितथैवच॥ नरधर्माश्चयेसर्वेहाहाभूतप्रचेत
नाः॥ पंचालसूरसेनाश्चउज्जायन्यांम्लेछबर्बरा॥ पांडुरोगागधाश्चैव अन्येवंदविडास्तथा॥ कर्णाटंचतथासिंधुस्तेनत्रविनश्यति॥
वायव्यमंडले॥ आग्नेयाचतथामूलंपूर्वाषाढातथैवच॥ रेवतीचारणंरौद्रंउत्तराभाद्रपदातथा॥ यदत्रलभतेतत्रविकारोविविधाभवे
त्॥ वारुणंतंविजानीयात्तस्यवक्ष्यामिलक्षणं॥ बहुक्षीरघृतागावोबहुसस्याचमेदिनी॥ आरोग्यंतत्रजायंतेबहुपुष्पफलद्रुमा॥
कीटिकामूषकाश्चैवबालभामृगकर्कयो॥ यस्यांसस्यारोसपातिष्ठंतस्थलिलसंस्थिता॥ वारिवगभ॰ यत्रस्थास्तेतिष्ठंतिकीटकाः
धन्यानिचसमर्थानिवृक्षाश्चफलिनाभवेत्॥ पृथ्वीजस्यान्वितंश्चैवसर्वदोषविवर्जिताः॥ नागराकीटसोराष्ट्रतथैवसिंधुनागराः॥ सुराष्ट्रा
र्णविनश्यंतियवनानितथैवच॥ हिल्लिसमुद्रयालोकाविनश्यंतिविशेषतः॥ अथमाहेंद्रमंडलं॥ श्रवणंवासवंमैत्रंउत्तराषाढाचरोहि
णी॥ अभिजिच्चतथाज्येष्ठानुमाहेंद्रमंडलं॥ प्रजासमुदितंतस्मिन्सर्वदोषविवर्जिताः॥ सिंधुकुर्वंतिराजानोसप्तसंपृथिवीतले॥

समुद्रामागधश्चैवमध्यदेशाल्पकश्चवच॥ सर्वेसौम्यनवोत्पत्तिकृत्तिकासंचरस्तथा॥ नंदनिचनतोदेशातस्मिन्नुवतिदर्शने॥ वैनाल्यापन्नगा
क्षतापीडयंतिनक्षेशयः॥ उडा आणोंकारका॥ ईमीरमालवंकुकुणंनथा॥ कांडदेशोविराटश्चसमरकंदोविनश्यति॥ मासत्रिकंचआरनवंका
ग्यंचद्विमासकं॥ मासंमेकंचवारुण्यंमाहेंद्रस्याविरात्रकं॥ इतिमंडलचंत्वारिंशोधवायणेकथितं॥ ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिग्रहणं
प्रयत्नतः॥ उदयास्तंगुरुपुत्रःफल्गुनस्यप्रकीर्तितं॥ देवगणनक्षत्रेशुक्रोअस्तमनंकरोति॥ तदारेवुरासाणेविग्रहं॥ चारसाणभरू
अचिविसाछं। चंपास्वचक्रेविनश्यति॥ हिंदुस्तानविग्रहं॥ रहंवासणेविग्रहं॥ भरुअचिस्वस्छं॥ चंपास्वचक्रेविनश्यति॥ मनुष्यगण
नक्षत्रेशुक्रोअस्तमनंकरोति॥ तदाहिंदुस्तानविग्रहं॥ गंगपत्तेन अन्नविग्रहं॥ कुंकुमयालं॥ कांडदेशंउहसंसिंधुभयत्रासं॥ उत्तराप
थिदुर्भिक्षं॥ डाविडदेशेविग्रहंभवति॥ शनैश्चरनक्षत्रेशुक्रोअस्तमनंकरोति॥ तदाहिंदुस्तानेविग्रहं॥ थानेश्वयुद्धं॥ मिसिअन्नविग्र
हं॥सिंधुभुमध्यमं॥ इतिपाहणवासं॥ भरुअचिविग्रहं॥ सोराष्ट्रेदुर्भिक्षं॥ एकपादेविग्रहं॥ गोडयुद्धंभवति॥ शुक्रोदयफल्गुनस्ये॥
देवगणनक्षत्रेशुक्रोदयंकरोति॥ तदाजालंधरविग्रहं॥ सिंधुदुकालं॥ आरबभयत्रासंसमरकंदयुद्धं॥ हिंदुस्तानेयुद्धं॥ कछदुर्भि
क्षंभवति॥ मनुष्यगणनक्षत्रेशुक्रोदयंकरोति॥ कलिंगमध्यमं॥ सोराष्ट्रेविग्रहं॥ स्त्रीराज्यंमध्यमं॥ केरलमध्यमं॥ कीमाणेअन्नवि
ग्रहंभवति॥ राक्षसगणनक्षत्रेशुक्रोदयंकरोति॥ तदाभिषरुपाटणविग्रहं॥ गुजरातअन्नविग्रहं॥ मेवाडमरीभयत्रासं॥ फल्गुनती
णदेशविग्रहं॥ सिंधुविग्रहं॥ कांडदेशविग्रहं॥ मालवदेशविग्रहं॥ भृगुकछविग्रहं॥ इतिउत्तरविग्रहं॥ उदयास्तगुरुप्रोक्ता श्रृणुश्र
ग्रयत्नतः॥ देवगणनक्षत्रबृहस्पतिउदयंकरोति॥ तदामेवोमदीणविग्रहं॥ भृगुकछेअन्नविग्रहं॥ मालुढेशेअन्नविग्रहं॥ उत्तरा
पथिविग्रहं॥ मुगधदेशेविग्रहं॥ नेपालेविग्रहं॥ मनुष्यगणनक्षत्रेबृहस्पतिउदयंकरोति॥ तदारवुरासाविग्रहं॥ पारासविग्रहं॥ १२
बर्बरेविग्रहं॥ मागलेरिविग्रहं॥ मथुराविग्रहं॥ राक्षसगणनक्षत्रेबृहस्पतिउदयंकरोति॥ तदामागधभयत्रासं॥ सिंधुभ
यत्रासं॥ गुर्जरातभयत्रासंविग्रहं॥ हिंदुस्तानविग्रहं॥ चीणदेशेअन्नविग्रहं॥ देवगणनक्षत्रेगुरुअस्तमनंकरोति॥ तदादेवदा

नविग्रहं॥ थाणासीविग्रहं॥ मरुदेशेदुर्भिक्षं॥ केदारविग्रहं॥ मनुष्यगणनक्षत्रेगुरुअस्तमनंकरोति॥ तदासिंधुविग्रहं॥ पांचालेअ
न्नविग्रहं॥ जरिजाणअन्नविग्रहं॥ यमुनाविग्रहं॥ काश्मीरविग्रहं॥ राक्षसगणनक्षत्रेगुरुअस्तमनंकरोति॥ श्रीपर्वतविग्रहं॥
विदर्भोविग्रहं॥ ॥ इतिश्रीधवायणंगुरोरुदयास्तफलं॥ श्रवणेचमघाश्विन्या॥ इत्यादिगणत्रीणि॥ ॥ श्रृणुपुत्रप्रवक्ष्यामिग्रहणं
सुखावहं॥ एकराशिगतादारुढाकथयामिविशेषतः॥ अर्कोर्किबुधचंद्राणांएकराशौयदाभवेत॥ परचक्रागमंविद्यात सिंधुदेशवि
नाशतः॥ एकराशौयदारुढोभौमशुक्रगुरुःशनिः॥ सप्तन्यंमंगलाढ्यंपरचक्रेविनश्यति॥ ३॥ एकराशिसमारुढोगुरुभौमरविः
शनिः॥ सोराष्ट्रेचभवेद्युद्धं सिंधुदेशंविनश्यति॥ ४॥ एकराशिसमारुढोगुरुसोमशिरविस्तथा॥ भौमराहुसमायुक्तेसिंधुदेशंविन
श्यति॥ ५॥ इतिश्रीधवायणंसमाप्तं॥ ग्रहयुद्धंउदयादिफलंसमाप्तं॥ ॥ अथविस्तरलाभप्रश्नः॥ ॥ स्त्रीलाभेव्यस्तगंयोगे
लाभस्त्रीणांवरस्यच॥ लग्ननाथोवरश्चिंत्योचिंत्यानाथोतुधूनपात॥ १॥ वरलाभोहिकन्यानांस्वस्वयोगप्रकल्पने॥ परपुरुषद्रेक्का
णेःपुरुषैःपुरुषग्रहैः॥ २॥ युग्मारिधुवरप्राप्तिरेवंपुरुषसंज्ञके॥ द्रेक्काणेपुंनवांशेश्चपुंग्रहैर्नरनारिभिः॥ ३॥ इतिवरलाभप्रश्नः॥
अथधनाविवाहिनाभार्याप्रश्नः॥ ॥ वनेवतुर्येसौम्यत्वमापन्नेलग्ननाथता॥ सप्तमेसौम्यनांयामे पथुक्तंविनाहिता॥ १॥
क्रूरेनचतुर्थेस्यात्परिणीतानिनेविनी॥ सप्तमेक्रूरिनेचस्यान्धनेवाहिकुटुंबिनी॥ २॥ उभयेसौम्यनांप्राप्तेदुर्लोधनविवाहिते
उभयेक्रूरनांप्राप्तेनधना हनविवाहिना॥ ३॥ सप्तमेक्रूरिनेभावेतुर्येनुसौम्यसंयुते॥ धनानस्यभवेद्भार्यापरिणीतास्त्रेवहि॥ ४॥
सप्तमेयदिराहुःस्यात्पश्चायांवाथजन्मनि॥ जायान्यरिणिता हिंसासापत्नीम्त्रेवहि॥ ५॥ तुर्यसप्तमयोःक्रूरेशुक्रेचबलवर्जि
ते॥ परिणीता नेवाजीवतिकामिनी॥ ६॥ सप्तमंतुर्यकंवापिनुगंसौम्ययुतंभवेत॥ परिणीताधनाप्यपिदुस्तेवरकन्यके॥ ७
जायांग्रहोक्तमानेनभार्यामंत्र्याविलोकिते॥ जायायत्प्रमाणेनभटमंत्र्यास्फुटंभवेत॥ ८॥ बालःशशीतनुस्थोपिकुमारीप्रवदे
न्नारिंप्रिया॥ रूपोपेतांप्रसतांचगुरुभक्तांनिनंविनी॥ ९॥ वृद्धांशनिःशनिश्चापिजरितांयोषितांस्त्रियां॥ शुक्रभौमोचरेवेट्टोय

दतोर्हनकर्कटौ॥ १०॥ इतिश्रीवादिविनोदिताभार्याश्लोकः॥ ॥ अथस्वागमनेश्लोकः॥ अस्मिन्वर्षेविजानेमेभविष्यतिनचाभवेत्॥ लग्नेवा पंचमेस्थाने मदनेवोभयोस्तगः॥१॥ चंद्रेदृष्टेथवायुक्तेक्रूरदृष्टेचपंचमे॥ नीचस्थेऽस्तंगतेभौमेनवापत्यप्रजायते॥२॥ अथवोममभार्यायाभविष्यतिन चाथवा॥ इतिप्रश्नेममार्यायानिर्णयःखलुपंचमात्॥३॥ चंद्रयुक्तेक्षितेतगेभौम्ययुक्तेक्षितेपिवा॥ रुचस्थाच्युदितेतत्रपुण्यापत्येप्रजा यते॥४॥ हरिहरश्चिवकन्यापंचमगश्चंद्रतोविलग्नाद्वा॥ एकाकालेवाच्यः स्वल्पापत्यंभदाएण॥५॥ चंद्रोबाथदिलग्नेशः पंचमभुवनेस्थितः॥ सौम्येक्षितेयदावस्थंगर्भिणीतिनदाभवेत्॥६॥ मनांतरंयदाकाडेगुरुशुक्रबुधास्त्रयः॥ प्रसक्ताचनदावाच्यागर्भिणीक्षेमपूर्वकं॥७॥ चंद्रशुक्रोयदागर्भेलग्नेभेवायस्थितोयदि॥ तदापुण्यवतांवाच्यं अपत्यजन्मनिश्चितं॥८॥ लाभपंचमसंस्थेनुप्रपश्यंतपरस्परं॥ चंद्र युक्तोयदापुंसज्ञायतेनात्रसंशयः॥९॥ पुत्रोवापुत्रिकावापिपत्नीगर्भेभविष्यति॥ इतिप्रश्नेबुधैर्ज्ञेयंपंचमेऽतिलग्नयो॥१०॥ लग्नेवापंचमे शेचेन्नरराशौव्यवस्थिते॥ तदापुत्रसमाहेऽंगेनराशौस्त्रीपदेचिमे॥११॥ अथयुग्मलग्नस्थेमंदेपुत्रजन्मसनोमतं॥ समलग्नेसमांशेवापुत्री जन्मसुटंभवेत्॥१२॥ यदिंदुशुक्रभोमाभ्यांयुक्तेवा।वीक्षितःशुभैः॥ तदासोजायतेपुत्रोनात्रकार्याविचारणा॥१३॥ पुत्रांशोलग्नपतिस्त्र्यधिपेवीक्षतेनरराशिस्थः॥ पुत्रोवाभवितावाच्यास्त्रीरांशेनवनिपुत्रिच॥१४॥ पंचमाधिपतिर्लग्नमतेलग्नेयदाशिषा॥ तदापुत्रसमादृश्यः एकस्यबुधैर्विलं॥१५॥ लग्नेशःसप्तमंद्दष्टोजातमतेशोवाशःसप्तमंद्दष्टो॥ आयेमतेथवाशत्रुपुत्रप्रश्नेगुरोर्वदेत्॥१६॥ लग्नेशोलग्नसं युक्तोनरराशौरविस्थितः॥ तदाबुधःपुमान्वाच्योकन्यकाचान्ययेपुनः॥१७॥ लग्नेंदुपापयोर्मध्येस्थितोनशुभवीक्षितो॥ युगपद्वाए कापिसगर्भस्त्रीविपत्तिदा॥१८॥ युक्तेरंध्रथवासौम्येस्वामिनावाविलग्नतः॥ पंचमेकथयेज्जन्मसुतानांचिरजीविनो॥१९॥ एकंवाद्वि थवापत्येभविष्यतीतमादिशेत्॥ द्विस्वभावेलग्नेचेत्तत्रलग्नेशशुभग्रहाः॥२०॥ तदापत्यंद्वयंवाच्यंशुद्धलग्नेबुद्धिस्फुटं॥ चरेद्वद्वौजा यंतेस्थिरेत्वेकंचरंमतं॥२१॥ दिनरात्र्युदयेलग्नेलग्नस्वामिदिनग्रहैः॥ यदिनातेस्तदाजातेवाच्यंद्विद्वाजन्मविक्षणे॥२२॥ चेत्चारि खेटयुग्मानिचेद्वर्तियंदकना॥ तदापत्यद्वयंचेति।एकालग्नेसतांमतं॥२३॥ लग्नंचेद्गुरुनैवपश्यंतितदान्यजातस्य॥ पापयु

क्तपुनःभार्किंचंद्रावस्तंगतसंभवे॥ २४॥ रवियुक्तेनदाचंद्रेनपश्यतिगुरुर्यदि॥ तदागर्भोन्यवाच्योनिर्विकल्पंमनांषिभिः॥२५॥ इतिगर्भेप्रश्नः॥ ॥ अथराजादिपदप्राप्तिप्रश्नः॥ दर्पवस्तेनभानोर्धनुर्गादिस्थानभक्षिते॥ तनुर्वेद्रिकोणस्थेराज्यादिपदलब्धये॥१॥ मूर्तिपत्यूचनाथेनस्वो च्चस्थेनवीक्षितः॥ तदाचंद्रेपदाप्तिंचलग्नेलग्नेश्वरोपिवा॥२॥ स्थिरलग्नेयदावाप्तिःसाम्यस्वामियुतेक्षिते॥ तेनोदितनराज्येद्वेराज्यंभव तिनश्रुतं॥३॥ स्थिरंपदंस्थिरैः प्रोक्तंद्वंद्वगैश्चापिशुभाधिकैः॥ क्रूरयोरपियोगेचभवत्येवपदच्युतः॥४॥ चतुःपंचस्थेचंद्रेस्थैःकेंद्रको णगतैर्ग्रहैः॥ वाछितेनवपदंवाप्तिंदेद्रावंद्रानुमारतः॥५॥ तुंगस्थोमूर्तिगःखेटश्चाथमूलत्रिकोणगः॥ आत्मस्थिकपदावाप्तिरंध्रो कानुगग्रहः॥६॥ वर्गोत्तमेशुभैर्युक्तेशीर्षोदयसमन्विते॥ निर्युक्तक्रूरवर्गोपपदप्राप्तिनदुर्लभा॥७॥ अन्योन्यक्षेत्रमालोकेन्मूर्त्तेश्च रपदेश्वरः॥ एवमिंदुर्नभोनाथमूर्तिनाम्योपदार्थकः॥८॥ परेश्वेपदंपश्येत्तत्पदंचस्थिरंभवेत्॥ मध्यमेऽशुभराज्यंराज्यभंशोमध्य पगे॥९॥ इतिराज्यपदप्राप्तिप्रश्नः॥ ॥ अथसेवासेवकप्रश्नः॥ ॥ उदयेनिशशीर्षोदयभेप्रश्नेदयानिर्गमेनृपप्रश्नार्थः॥ प्रीतिकरंसंबंधः नहिपरीक्षेनविपरीतः॥१॥ लग्नाद्वितीयमष्टममस्तमकंत्रगताःग्रहाःपापाः॥ सेव्यविनाशंयदिवामरणंतस्याःकथयंति॥२॥ अष्टमपा पैर्मरणंमस्तमगेमस्तमगैस्तत्रविघ्नमः॥ पूर्णविलक्षयोद्वितीयस्थेपुनरेनाश्रयेणार्थः॥३॥ लग्नेशशीर्षोदयप्रश्नेधनेदृष्टेदये भवेत्॥ सेव्यसेवकयोप्रीतिरप्रीतिस्तद्विपर्यये॥४॥ ॥ इतिसेव्यसेवकप्रश्नः॥ ॥ धर्मार्थकामसंसिद्धिस्थोमनुःस्मरवंज्ञयोर्लाभः॥ शीर्षोदयविल ग्नेनरश्चाकालेभवेत्सर्वं॥१॥ सौम्यवर्गेथवावर्गेसिद्धःशीर्षोदयेपिच॥ असिद्धस्त्वन्यथावाप्तिश्रेयःस्वल्पंफलं॥२॥ केंद्रत्रिकोणगैः सौम्यैःक्रूरैःक्रूरत्रिलाभगैः॥ सर्वार्थसिद्धिरुद्दिष्टायेविपर्यस्तेविपर्यये॥३॥ वृषकुंभतुलासिंहाःशुभदृष्टाविलग्नगाः॥ शुभायो र्द्वेसरौहोरावर्गेश्वेशनवांशकाः॥४॥ ईशभनाःसर्वभावेषुशुभारिष्टार्जिताः॥ एवंक्रूराविनाशायलाभायशुभिवर्जिताः॥ ॥५॥ उच्चारिस्थानगासौम्याःसक्रूराभवनायकाः॥ धनकेंद्रत्रिकोणास्थाद्दष्टाक्षेमकरामताः॥६॥ स्वल्पक्षेमकराःखेटाःसक्रूरा निर्बलावपि॥ लग्नाद्व्ययगश्चंद्रोनेष्टक्षीणापिसर्वतः॥७॥ इतिशुभाशुभप्रश्नः॥ ॥ अथदृष्टिप्रश्नः॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्या

मिदृष्टिरुक्षणमुत्तमं॥ वदतिश्रीरोमकाचार्यो भूसुतंप्रतिप्रियं॥ शुक्रज्ञानिसूर्यकुजासन्निरयोचंडभागेवोक्थितो॥ अश्रयसमस्वरू
पज्ञाशिसतेदेवेपूज्योच॥२॥कुंभमीनमृगकर्कटस्थिकन्योन्निश्वसदज्ञाः सप्त॥ महज्ञाराशयएतेशोषाज्ञस्त्रीज्ञिताःपंच॥३
सज्ञोनिर्जलयुक्तेप्रचुरज्ञस्त्रीवर्षाम् भृगोसतेनतथारविः शीतरश्मिः स्मरस्थितः ४ सोम्यविलोकितश्चापनेगराज्ञथवात्रिकोण
कन्यचयोर्जलपानुहे नुः॥५ तुलकन्यांगृहेयुक्तेसज्ञेज्ञेजलदायकं मज्ञेज्ञेजलरंवेटश्चार्थंशस्थिश्चघनंजले ६ शुक्रेकूपेसज्ञाशी
टस्थेथवाशुक्रेकार्यदाशुभैः लग्नस्थोनारसाशिस्थो वेंद्रस्थोवाज्ञजायकः ७ चेत्कर्कटगिनाःस्युः केंद्रस्थाःक्रूरवर्जिताः पूर्णेंदुशुक्र
देवेज्यबुधैर्युक्तोज्ञलार्थकाः ८ लग्नात्सूर्यैयदिस्थानेशुक्रेंदुयदिचेंद्रगाः एवंयोगेमहारथ्याशुभकालःसनेमतः॥९ कंटकेपं
नगेहेषुशुक्रयुक्तेषुसर्वतः पादोनरथ्याशउयादेक्रूरयुक्तेथवर्षणं १० अन्येवराशिकेंद्रेषुशुक्रसाईग्रहेयुता तदाहेदृष्टिरादेश्या
दृष्टिज्ञानविचारदेः ११ शुक्रेज्ञलग्नेशुभैःखेटैर्दृष्ट्याभावप्रकल्पिता॥ एछायांतुर्यगेमोरेदुर्भिक्षंचेवविग्रहं १२ दृष्टिप्रश्नेकुजोमृ
त्योविद्युद्भयंनिचंचला घनगर्जनसंयुक्ताभवेद्दृष्टिर्गरीयसी १३ लग्नेशुक्रेकुजश्चंद्रउदितश्चास्तगतिर्यदि अतिदृष्टिस्तदादेश्या
नानाश्चर्यकरीज्ञेयः १४ सवातकारिणीदृष्टिर्विद्युद्भयपरिवर्तनः ज्ञानिनेंदुविनाशायशुक्रेवर्षणंघनं १५ दृष्टियोगेचरलग्ने
दृष्टिर्द्वादशयामके॥ चरलग्नेधनेमोम्येस्थितेमूलेहिदादशः १६ द्विस्वभावेयदाप्रश्नेषड्दिनेनफलं ज्ञानिनादुर्युतोबंधोद्व
र्भिक्षेनचगोरवं १७ शुक्रार्थेच्छासमयेमतिशुक्रेशेतिमधुरस्वरेण दिशिविनेत्रस्यशुचापनेवादिशेनिनोयंप्रवरंयदाद्याः
१८ इतिदृष्टिप्रश्नः अथदेशभंगाभंगसस्यनिष्पत्तिरनिष्पत्तिश्च॥ ॥ अत्रवर्षेदेशभंगः कस्यापिहभविष्यतिइत्थंप्रश्नेभ
विष्यति १ चतुर्णामपिवर्णानांमध्येयत्रभयंहरः तस्यांचसस्यनिष्पत्तिस्तत्रैवभविष्यति॥ २ यस्यांदिशिराशियोनिस्थेंदु
र्भिक्षंविनिर्दिशेत्॥ ३ दिशियस्यांरविस्तस्यांधान्यनाशोनिनापनः यत्रापिमंगलःक्रूरस्तस्यनाशोहिनत्रच ४ यस्यांदिशिराजभानुश
समस्तबलवर्जिताः निष्पत्तिंसर्वसाजेयासमस्तस्य संपदा ५. केंद्रेषुसर्वतःपापासमस्तबलसंयुताः देशास्तदाविनश्यंतिज्ञात

397
1941

व्यःज्ञान्वेषिविदेः ६ तदासौम्यासमस्तेषुकेंद्रेषुचबलोत्कराः तदाजनपदःपुष्टस्तुष्टसस्यसमृद्धिमान् ७ इतिदेशभंगसस्यनिष्पत्तिरनिष्प
त्तिरुक्ता इतिश्रीप्रश्नज्ञानंनाजिकंसमाप्तं इतिश्रीपद्मायणेमल्लनंमसमाप्तं एवंग्रहयुद्धंअधमवीथीमध्येप्रवर्त्तते पुनःश्रीरोमका
चार्योवदतीतिस्वमात्मजं मेधुजन्मप्रवक्ष्यामिशृणुपुत्रप्रयत्नतः पूर्वमेवत्वमेरुद्वापरमध्येशोषवर्षेअशुभं ५१ श्रीमत्कालिलि
प्यब्दिकपस कालिप्यराज्येशुक्लनामसंवत्सरेभाद्रपदमासे शुक्लपक्षे १३ शनौ ज्ञानभिधानक्षत्रे कुंभस्थेचंद्रे कुंभलग्ने सूर्योद
याद्गतघटी २६ पल ४ समयेशुभवेलायांद्विव्यब्दैःप्रमृतापरथीमिंधुर्जातः अनेनविधिनामिंधुजन्मभूतं अस्यलग्नवशात्मिं
धुजन्मप्रधानंजेज्ञहस्तामवलासरूपा धर्मबलाख्यलग्नवशान्मिंधुर्जीवति आयुर्दायुवर्ष१६००मास११दिन२७घटी५४प
ळे३६पश्चात्अनामिकाभवंति मिंधुभाकारं मिंधुमूलं मूलस्थानंवामपार्श्वं अनंतरंवामपार्श्वं कर्णपूरं वामकरं मेरुचंद्रोद्द
क्षिणकरं उदरं नाभिं विग्रहकोटि पादोमिंधु मागरं एवविधस्त्रीरूपाकारामसमस्तमिंधु भूलक्षाधि ३५०००० प्रमाणंमिं

धुमस्तभवला यदाबृहस्पतिर्वक्रोस्तांभवति तदामिंधुपरमाणुरुह्यति राहुभीम
वशात्बहवोप्रमाणेनचीक्ष्य धूम्रभ्रयतां पुनरेवप्रवक्ष्यामिश्रीईशेनजन्मव्याख्या
मः नवांदापूर्वसंवत्सरेद्वापरांते शोषवर्षेशुक्ल ६३ ५२ वैशाखमासे शुक्लपक्षे ३ गुरौ रो
हिणीनक्षत्रे वृषस्थेचंद्रे सूर्योदयकाले ५६ मेषलग्नेशुभवेलायांमर्त्यमिथुनोयो। नीसंभ

वोपजातः एषलग्नवशा आयुर्दायं २१०००० मास ४ दिन १० घटी ३६ पळ १२ श्रीईशेनजीवति लग्नवशेनधूम्रभ्रयतां श्रीपद्माय
णोरोमकाचार्योवदति गुरुशोरुशुक्रस्यदृर्यदेशाग्विनाशं वदन्ति॥ भूमिस्थनाविचरंति विक्रमाद्वनराशिगता धनधान्यहिरण्यवि
नाशकराःक्षपयंतिमहीधरस्थचधरा मेषमध्येगुरुर्मारीबाबरदेशउद्दंडवायुनाक्षयंयाति अगदादुकूलाद्विनश्यति केरल तीणदे
शान्यंभवति १ वृषभमध्येगुरुः मोरीनांकथयाम्यहं हमीयाणमंकडाद्विनश्यति लोहनगरउद्भवंभवति २ मिथुनमध्येगुरुः

सारितदाभिसरद्रोहाद्विनश्यति ३ कर्कमध्येगुरुः सोमाभावर्णोपापराद्विनश्यति ४ सिंहमध्येगुरुः सोरीतदातुरङ्गास्त्रानंविनश्यति ५ कन्यामध्येगुरुः सोरीतदाकर्नाट्कैनचंपकारण्येदक्षिणापथेदः स्थं ६।७।८ धनमध्येगुरुः सोरीतदानीमाउरदेशाभिद्रुपुराणीभन्ये ति ९ मकरंमध्येगुरुः सोरिसिंधुसमस्तपापारद्विनश्यति १० यदाकुंभमध्येगुरुः सोरीतदापारामधातवः क्षयंयांति ११ मीनमध्येगुरुः सोरी आदनद्रुद्राद्विनश्यति १२ अथभौमसौरिकथयाम्यहं भौमसौरीयदागछेत्सासौरीकथयाम्यहं मेषमध्येभौमसौरी तदाकर्नाटकंपीड्यंति १ वृषमध्येभौमसौरीतदाक्रीमाणंचनश्यंति २ मिथुनमध्येभौमसौरीतदासीहाउरमेघाद्विनश्यति ३ कर्कमध्येभौमसौरीतदावाडुरेणुपापराद्विनश्यति ४ सिंहमध्येभौमसौरी तदाआजीजमानीजविनश्यति ५ कन्यामध्येभौमसौरीतदाकुरुराज्यंविनश्यति ६ तुलामध्येभौमसौरी ७ वृश्चिकमध्येभौमसौरीमेहमहाबलैर्दाकोशांबीउद्विशिना ८ धनमध्येभौमसौरीतदाकाउमीरंविनश्यति ९ मकरमध्येभौमसौरीकन्यकुब्जंविनश्यति १० कुंभमध्येभौमसौरीतदासौराष्ट्रंविनश्यति ११ मीनमध्येभौमसौरी कछादेशंविनश्यति १२ रविसौरियदागछेत्सासौरीकथयाम्यहं मेषमध्येरविसौरीतदारवुरासाणंविनश्यति १ वृषमध्येरविःसौरीतदासमरकंदंविनश्यति २ मिथुनमध्येरविःसौरीतदागोउदेशंचपीड्यंति ३ कर्कमध्येरविःसौरीतदादेवलंचविनश्यति ४ सिंहमध्येरविःसौरीगुरुस्त्रानंभाणस्त्रानंचनश्यति ५ इस्लादुर्गंचनश्यति ६ कन्यामध्येरविःसौरीबंगालंचविनश्यति ६ तुलामध्येरविःसौरीइस्लादुर्गंचनश्यति ७ वृश्चिकमध्येरविःसौरी अग्निवातंचजायते आरबंचपीड्यंति ८ धनमध्येरविःसौरीवराटंचविनश्यति ९ मकरमध्येरविःसौरीतदाकुराणांविनश्यति १० कुंभमध्येरविःसौरीतदारोमकपट्टणंविनश्यति ११ मीनमध्येरविःसौरीतदामारुआरिविनश्यति १२ अथशुक्रसौरीयदागछेत्सासौरीकथयाम्यहं।। मेषमध्येशुक्रसौरी बाबरंचविनश्यति १ वृषमध्येशुक्रसौरीवेरंचेदंविनश्यति २ मिनमध्येशुक्रसौरीवनस्थलीविनश्यति ३ कर्कमध्येशुक्रसौरी अंतर्वेधंचनश्यति ४ सिंहमध्येशुक्रसौरीतदानीसाणंविनश्यति ५ कन्यामध्येशुक्रसौरीमालवकंहिबसा

399
1941

रंचनश्यति ६ शुक्रमध्ये तुलमध्ये शुक्रसौरीतदाभृगुकछस्थानाधिपंचनश्यति ७ वृश्चिकमध्येशुक्रसौरी आरोहंचइलादुर्गंचनश्यति ८ धनमध्येशुक्रसौरीदूगरांईचचक्रकूटंपाहणादरभद्रअग्निदाघाद्विनश्यति ९ मकरमध्येशुक्रसौरीमल्लिचारं विनश्यति १० कुंभमध्येशुक्रसौरीसमरकंदंचनश्यति ११ मीनमध्येशुक्रसौरीआरबंचविनश्यति।। १२ अथबुधसौरीयदाग छेत्सासौरीकथयाम्यहं मेषमध्यबुधसौरीएकपादंतदारश्यंनश्यति १ वृषमध्येबुधःसौरीतदाक्षीणंविनश्यति २ मिथुनमध्येबुधःसौरीदेवगिरंचनश्यति ३ कर्कमध्येबुधःसौरीगुर्जरंमालवंचनश्यति ४ सिंहमध्येबुधःसौराजानगरंविनश्यति ५ कन्यामध्येबुधसौरीयमुनातटनश्यति ६ तुलामध्येबुधःसौरीसिंधुराजाविनश्यति ७ वृश्चिकेचबुधःसौराजानगरंविनश्यति धनुमध्येबुधःसौरीतदापत्तनंविनश्यति ९ मकरेचबुधःसौरीभिङ्देशंचनश्यति १० कुंभमध्येबुधःसौरीकामरूचविनश्यति मीनमध्येबुधःसौरीपाराकरंचनश्यति १२ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिभृगुधर्मप्रयत्नतः १ कृत्तिकादोत्रीणिपूर्वोक्षाणिमध्ये कूर्मव्यवस्थितः आर्द्रादोचभवेत्रीणिमस्तमध्येप्रतिष्ठिता २ सर्वपादोचभवेत्रीणिपादोकूर्मस्यसंस्थितः उत्तरादोभवेत्रीणि दक्षिणाकुक्षिमाश्रिता ३ स्वात्यादोचभवेत्रीणिपश्चिमेपादसंस्थिता ज्येष्ठादोचभवेत्रीणिपुछेकूर्मस्यसंस्थिता ४ उत्तराश्चवनक्षत्रंपश्चिमेकूर्मपादयोः उत्तानभिषजिनक्षत्राःउत्तरांकुक्षिमाश्रिताः ५ रेवतीत्रीणिनक्षत्रावामपादेनसंस्थिता पूर्वादोगणयेत्प्राज्ञः मुखंकूर्मप्रकीर्तितं ६ यस्मिन्नक्षत्रेभवेत्सोरःसंदशाश्वविनश्यति कृत्तिकादोहिणीसोम्यंत्रिपुक्षेत्रानोस्थिते।। ७।। माकेनमेरवलाकंपाकोसावीचचकोशिकी आर्द्रछत्रेगयांवंध्यंअंतर्वेधश्चमेरवले ८ कन्यकुब्जप्रजापतेमध्यदेशंविनश्यति आश्लेषाचमघात्रिपुक्षेत्रेनास्थिते ९ अंगवंगकलिंगंचवोंचीचंपकोशलं आरट्टापुनवसुःपुष्यंत्रिपुक्षेत्रानोस्थिते १० बर्बरंमालवेदंचचनवासंचसिंहलं नार्पाभीमाथलंकोंत्रिकूटंमलयस्तथा ११ श्रापर्वतंचक्रिष्किंधाविनाशंदक्षिणापथं स्वातीविशाखयोमध्येचत्रिपुक्षेत्रेनास्थिते १२ देवालयंविनश्यंतिकूपवापीतथैवच सोराष्ट्रकुंतिमालंचअचलंचविनश्यति १३ पवित्रगिरिसुनरं मेंधवंचन

थामेरुंभद्रशुक्लंचकुंकुमं इलाद्वर्गंचपांचालं विनश्येतिनसंशयः १४ ग्रेषामूलंतथापूर्वोत्रिक्षेत्रंनोस्थिते परामनार्बुदंकच्छंभ
र्वतीपूर्वमालवं १५ पारसमागधाश्चैवसौवीराल्लाटसिंधवाः अंतःपुरंविनश्येतिस्त्रीराज्यंपुछसंस्थि
ते १६ उत्तराषाढंवेरुड्यंधनिष्ठांशानितिस्थिते गुर्जरानसुरत्राभेरदेशंसरस्वतीं १७ पूर्वंतुचंद्रभा
गाचतथारुड्यंवैदिकां मेरुश्रृंगंविनश्येतियेचान्येकोणसंस्थिता १८ वारुणंउत्तराषूर्वोत्रिशुक्लक्षेत्र
नोस्थिते उद्दियाणंमूलस्थाने बहुकुंकुमकोशलाः १९ जालंधरंचकाश्मीरंचंपकाहारमेवच ऊर्ध्व
कर्णाःश्यामवक्त्राश्चेयान्येमरुपाटकाः २० एतेदेशाविनश्येतिउत्तराकुक्षिमाश्रिताः अश्विनीरेव
तीयाम्यंत्रिशुक्लक्षेत्रंनोस्थिते २१ गंगाद्वारंकुरुक्षेत्रंश्रीकंठंहस्तिनापुरं विनश्येतिनसंदेहा नाशः कीर्ति
तंमुनिभिःपुरा २२ एवंप्रमाणंकूर्मस्यधूम्रःसंकीर्त्तितंमया इतिपवायणेकूर्मचक्रं॥ ॥वदंतिश्रीरामकाचार्योधूम्रपुत्रंप्र
तिप्रियं ग्रहयतांमंडलाग्रेयंफलंवक्ष्यामिपूर्वतः १ विज्ञारवालुनिकापुष्पाभरणाचमघाहयं पूर्वाभद्रपदंतेषुग्रहणंशशिसूर्ये
योः २ उल्कापातंविनिर्घातंभूमिकंपंतथैवच प्रचंडमारुतश्चैवग्रहणंसूर्यचंद्रयोः ३ पांडुरुष्टिदिशांदाहंविद्युतिवर्षणंयरि
तारकापतनंदृष्ट्वा अन्यच्चिंचिन्महाद्भुतं ४ आग्नेयमंडलंतत्रमसक्तक्षाभवंतिहि एभिर्लक्षैर्महालिंगाउत्पद्यंतेक्षणेक्षणे ५ फ
लंतेनैववक्ष्यामिकारणंक्षाणुपुत्रकं नेत्ररोगाअनीसाराभयंधान्यंचतुष्पदा ६ अन्यक्षीरघृतागावोअल्पसस्याचमेदिनी अ
न्यद्दृष्टिमहर्घंच अन्यपुष्पफलद्रुमाः ७ क्षुधयापीड्यतेलोकाःसंधवाभिक्षयापुनः बर्बराजालंधराश्चैवकीरासर्वोत्तरापथं ८
एतेदेशाविनश्येतितस्मिन्नुत्पातदर्शने॥ ॥इत्याग्नेयमंडलं हस्तिचिन्हथासानीमंगोवाथपुनर्वसू उत्तराफाल्गुनीश्चैवअश्वि
नीमघमः स्मृतः १ यद्यत्रकिंचिद्वामर्थंनवदुःखंविनिर्दिशेत् तस्मिन्नरिष्टविकाराणितस्यवक्ष्यामिलक्षणं २ महावातेन
थावातिमहाभयमुपस्थिते उन्ननापितथामेघानमुंचतिजलंबहु ३ प्राकारिणिचशृंगाणिनोरणान्ययमेवच वायुमेघाभिष्व

नानिपतंतिधरणीतले ४ देवाविप्रास्तथाराज्ञःक्षाश्चापिनथैवच नष्टनानतेमर्वेहाहाभूतमचेतसः ५ पांचाल्याःशूरसेना
श्चउज्जयच्चाम्लेच्छबर्बराः पांडुरामागधाश्चैवअन्येचद्रविडास्तथा ६ कर्णाटंचतथासिंधुंनादेशाविनश्यति तस्मिन्नुत्पात
दर्शने॥ ॥इतिवायव्यमंडलं॥आश्लेषाचमघामूलंपूर्वाषाढातथैवच रेवतीवारुणंरौद्रंउत्तराभाद्रपदास्तथा १ यद्यत्रलक्षतेसि
चिन्विकाराश्चयदाभवेद् वारुणंचविजानीयात्तस्यवक्ष्यामिलक्षणं २ पुनरेवप्रवक्ष्यामिश्रृणुधूम्रःप्रयत्नतः वदंतिश्रीरामका
चार्योग्रहयुद्धंफल्गुनंतथा ३ धूम्रश्चयनां अन्यश्चिपरवक्त्रंचदुर्भिक्षंव्याधिदारुणं सर्पमूषकयोज्ञेयासिंहव्याघ्रनिस्काराः १ पितुः
पुत्रेभवेद्वादंकन्यदेवगृहेगृहे मातापुत्रनमन्यंतेचधूम्रस्वरूपंतथा २ स्त्रीगर्भंचनश्यतिअतिवातंप्रवर्तते अन्यदृष्टिभवेन्नपोथा
न्यंत्रुष्कंचत्रुश्यति ३ आकाशंज्वलितंदीप्तंभयत्रासंचमेदिनी कंपितेभ्रमिनागंचमर्छंटाःप्रबलाभवेद ४ विपरीतंभवेच्छा
स्त्रंधूमाकारंचवर्त्तते स्थानेस्थानेभवेद्युद्धंनष्टतीर्थंचजंगमं ५ अतिरोगभयाएथादुर्भिक्षमतिदारुणं मंत्रस्तंभनमुच्चाटंत्रा
कुलंचवनश्यति ६ एवंरूपेग्रहेयुद्धंज्ञातव्यंश्रीयवायणे सिद्धांतेरोमकोदृष्टंशास्त्रदृष्टेनकर्मणा ७ एवंग्रहयुद्धंअधमवीथी
मध्येप्रवर्त्तते॥ ॥पुनःश्रीरोमकाचार्योवदतीतिस्वमात्मजः १ श्रीपूर्वेसंवत्सरेद्वापरमध्येशेषवर्षमुक्तं ५२ ५३ श्रीमत्कालिय
विलपसः कालियराज्येऽकूमासंवत्सरेभाद्रपदमासेऽकूपक्षे १३ शनौ स्नानभिषानक्षत्रे कुंभस्थेचंद्रेकुंभलग्ने सूर्योदयाद्गत
घटी २५ पल ४ समयेऽकभवेत्सायंदिव्यवर्षे : प्रस्तासिंधुर्जातः अनेनविधिनासिंधुर्जातः अनेनविधिनासिंधुजन्मभूतं अ
स्मल्लग्नवशात्सिंधुजन्मप्रधाना नेत्रहस्तासबलासरूपाधर्मबलाश्वस्तभवशातसिंधुर्भवति आयुर्दायुर्वर्ष १६०० मास ११
दिन २० घटी २५ पल ३६ पश्चात् अनामिकाभवंति सिंधुआकारंमूलंमूलस्थानेवामपार्श्वं अजमेरुदक्षिणंपार्श्वं कर्णपूरं मेरुचं
दिशा दक्षिणकरं महातेनं वामश्रन्यंशिवस्थानं दक्षिणस्तनंबभ्रुरं उदरंनाभिविग्रहकोटं पादोसिंधुसागरं एवविधिस्त्रीरूपवा
रा समस्तसिंधुअंडल लक्षसिंधु ३५०००० प्रमाणंसिंधुसमस्तं अबलायदाचदस्यति कर्कस्थोभवति नरा
सिंधुपरमाणुएणा.नि शतुभोमवाहवाप्रमाणेवरिष्यति धूम्रःश्रयनां एवंदेशानांप्रथमंसिंधुःकथितं पुनरेवप्रवक्ष्यामि

श्रीदैवज्ञनन्नभव्याख्यास्यामः तत्रादौदेवाश्चरहृष्टमनसः पुरांप्राप्यमरावतीं पुष्यस्नानेबस्तनरं तदारभ्यप्रवर्त्तते ६ पुष्यस्नानेनरूप
तः कर्त्तव्यंदेवविप्रपुरोधाभ्यां नातःपरंपवित्रसवोपातांतः करमस्ति समुद्रतीरथोद्यानेननदीसंगमेश्व
भे महादेवथवातीर्थदेवनायतनेथवा ८ सर्वतः कुसुमोपेतवनद्विजवरैर्युते गृहरम्येविविक्तेवापुष्य
स्नानंसमाचरेत् ॥ ९ ॥ वराहमहिरणाक्षसिंहनायांभविस्तरं प्रज्ञानोनरपतेसारयंमहोत्पातस्वरूं।
शांतिदं १० अथानंतरंप्रवक्ष्यामिश्रृणुधूम्रप्रयत्नतः उदयास्तंभगुपुत्रस्यगुरोरवप्रकीर्तितं ११ दे

वगणनक्षत्रेनुऋक्ष्यास्तमनेयदि विग्रहंहिबलैरन्योभवतिभागवं २ मानुषेदेवनक्षत्रेभगोरस्तमनेयदि नरापत्तनरोगश्च भ
न्नविग्रहनश्यति ३ कुंकुणेनभयत्रासंलाडदेशेचउद्भवं मिथुनगापथेवान्नंउदितुच्छमादिशेत ४ राक्षसेचेवनक्षत्रेरवेरस्तमने
यदि तदाहिंदुस्थानेनविग्रहंसरापरैः सह ५ मिसिरेविग्रहंसर्वेमिथुनमध्येप्रजायते भृगुस्थानेचयोलोकाव्याधिभिःपरिपीडितः
ऋक्षोदयफलंवक्ष्येनक्षत्रेदेवनागणे ज्ञातंधरत्रमिथुंचदुष्कालाज्जविनश्यति ७ सरसेनभयत्रासंसमरकंदहिउद्भवं कंथकछ
कदुर्भिक्षादिनश्यंतिनसंशयः ८ मनुष्यगणनक्षत्रेऋक्षोदयजायते तथाकलिंगमध्यस्थेसोरांष्ट्रेविग्रहंभवेत् ९ स्त्रीरा
ज्येविग्रहंचैवकेरलामध्येनथैवच कौमाणंचैवनथावंगेदुःस्थमन्तर्यविग्रहात् १० राक्षसानांचनक्षत्रेकरोत्युदयमाभ्रुनित्
पत्तनानांचवेदुःखंगूर्जरेचान्नविग्रहं ११ मद्यमदिराभयत्रासेफेणसतीणेचविग्रहं मालवेभृगुकच्छेचपुरेखटकसंज्ञके १२
चंपकारण्यदेशेचस्थानेकल्पपुरेन्तथा दुर्भिक्षंजायतेराजंगंगानटनिवासिनो १३ अथवास्तमनंवक्ष्येगुरोःपुत्रप्रयत्नतः
नोवक्ष्यास्तमनंयातिनक्षत्रेदेवभागणे १ तदादानवदेवानांविग्रहंवाणारासीकरं ७ गुरुर्देशेचदुर्भिक्षंकदोरेविग्रहंभवेत् २ मनु
ष्यगणनक्षत्रेवास्तमेचेयमनंयदि तदासिंधुंचपंचालंजरिजालंचविग्रहं ३ यमुनाकच्छेचकाश्मीरेरण्यसंचविनश्यति रक्त
सांचेवनक्षत्रेकरोत्यस्तमनंगुरू ४ दशार्णतीचकांबोजेपारासंअन्नविग्रहान् गूर्जरेविग्रहंचान्नंकच्छेचवनसंज्ञकः ५ सैंधवे
चदेवायोद्धाख्यांशिवस्थानेचविग्रहं उदयास्तगुरोःप्रोक्तंश्रृणुधूम्रप्रयत्नतः ६ देवगणेचनक्षत्रेकरोत्युदयमंगिराः नराम

403
1941

ध्येमहीणेचभृगुकच्छेगमंडले ७ मारुआज्यांमागधदेशेनपालेचान्नविग्रहं मनुष्यगणनक्षत्रेगुरुर्यास्तदर्शयेत् ८ तदाक्षुत्सारणा
राक्षसंबर्बरंविग्रहंभवेत् गंगातीरेचवंगेलोकाविग्रहैःप्रखंगताः ९ किरातपल्लिसाढ्यैर्म्लेंछानांभवतिदारुणं राक्षसेचेवनक्षत्रेजो
वीयास्तुदर्शयेदा १० नदामगधदेशेचभयशासंचसिंधुके गुर्जरेचैवचीणेचआजूमाज्जकेनथा ११ अस्तमाच्चविनश्यंतिमूषकाः
शूकराः शुकाः ॥ ॥ इतिश्रीपद्मयोनिहृदयेगुरोरुदयास्तफलं ॥ ॥ अथान्यलंग्नंवक्ष्यामिश्रृणुधूम्रप्रयत्नतः यदीतिरोगमरणंचोभू
म्नपुत्रप्रतिप्रियं १ प्रणिपत्यपदंत्वेतिनत्वागनलंतमः ज्ञानं जन्मप्रदीपज्ञाल्लंभावाधिपभेदतोवक्ष्ये २ लग्नाधिपतिर्द्वेधनेरोगं
दीर्घनीविनंकुरुते अतिबलनिपतिचारुलाभसमन्वितंलाभं ३ लग्नपतिर्धनभुवनेधनवंतोविपुलजीवितंस्थूलं स्थानभ्रमणमि
त्यंमत्कर्म्मरतंनरंकुरुते ४ सहजगतोलग्नपतिसद्बंधुभ्रमुरगिनपरिकलितं धर्मरतंदातारंशूरंसबलकरोतिनरं ५ लग्नेस्वामुर्यगते
नृपप्रियंसुरजीवितंपुरुषं धनसुबंधनरंपित्रोर्भक्तंकलत्रबंधुकभोजनंकुरुते ६ पंचमगोलग्नपतिः सकलंसत्यागमपरंविदितं बंधु
जीवितंसुमतिसंकलनिरंतरंकुरुते ७ रिपुभवनेलग्नेशेधनीरोगंभूमिलाभंसबलं रणेधनिनमरिशंकुरुतेमपक्षान्वितंकुरुते ८
प्रथमेपतौसमगतेनस्वान्नीलवान्नबलेसुरुषः तद्वार्यापिसज्जीवतेजः कलिनाहुरुशाच ९ लग्नपतावष्टमगेरूपणोधनसंच
कलदीर्घायुः क्रूरेस्वचेरफदुनेतल्पकस्वरूपुषाभवत्यानः १० मूर्तिपतिर्यदिनवमसदाभवेन्नृपबांधवः सुकृततिसमस्तधर्मस
ज्ञीलःख्यातःसुतेजस्वी ११ प्रथमेंद्रोदशमस्थेनृपलाभपतिः सज्जीवश्च सुलाभपूजनमतिर्नृपः प्रसिद्धेरवेरवनि १२ एक
दशगलग्नपज्जीवितंसुतंसमन्वितंविदितं नेत्रस्खलितंकुरुतेपुरुषंबलिनंसदति १३ द्वादशगोमूर्तिपतोयदुबाम्बादुस्वरकोगामी
सहगेपत्रिंशल्लक्षतिनैतिविदेशगादितभक्तनरः १४ लग्नेधनगवेधनाधिपेसुलग्नेधनपतिःसज्जीवितः भोगभाजनसुदारसारभृ
च्चारुहिरण्यसमवोनरः १ लग्नाधिनाथसहजेत्रविपर्ययेस्यात्तद्बंधवःसुकृतवान्नरनाथपूज्यः सोकेरतःप्रवरयोषसुतोम

मुख्यःसुनंदस्वजनसंपन्निरहितेति २ लग्नतुर्यपविपर्ययेनरोगातंकमनिरंतःसदाबलः सद्गुरोपिनरिभक्तिभाग्भवेत्सांतिभरत्
जनकपक्षपालकः ३ व्ययस्थेतनयनंदनेशयोविद्याश्रितवपुर्विशेषतः ज्ञानवांनिखिलसांगरःस्यादशे कुलदीपकः पुमान् ४
लग्ननाथरिपुनाथव्ययस्थेद्यभूतिभवलाभभाजनं व्याधिवार्तितमहाबलोभवेद्वैरसाधनपरोरिसंग्रही ५ मूर्तिसप्तमपयोविपर्ये
योप्रियस्त्रीपितरतःप्रियासुखा ज्ञालकानिकरसालकांगनासेवकोभवतिलोलमानवः ६ लग्नमस्वपविपर्ययेभवेद्वधूततत्परति
मंदाबलः चौर्यशौर्यनिरतोनरश्चिराद्याति मल्कपदवीमथाहरेः ७ व्ययेकरणधर्मनाथयोर्नित्यदेवगुरुभक्तिनत्परः रतनला
भसत्कृतनैकमानसंधर्मचार्वरदयोर्विदग्रगः ८ ख्यातिमत्पभवलाभलोलुपोभूपतिर्भवतिनाभवंशुचि मात्मभक्तिपितृभक्ति
सारभव्ययेतनुपकर्मनाथयोः ९ दीर्घजीवितयुतः शुभान्वितः सोणिनाथकसत्कर्मवेदिवित् सर्वसिद्धसमूहभावधिर्ल
भलाभपविपर्ययेयेनरः १० विनिमयेतनुपव्ययनाथयोर्बहुपुः रूपणव्ययभोगकः धनपतिस्वदयेबुधोहितोजयतिज
न्मफलोदयदीपकः ११ श्रीमुरच्यासरभद्रबाहुविहितः श्रीजातकांभोनिधौउद्त्यांबुधवैकलेशमतः स्वार्थायलोकायच॥
श्रीमद्रोमकदेवसूरिसुगुरोः शिष्याणुनानिर्ममेसंक्षेपाद्विबुधेनमेदमतिनाजन्मप्रदीपाभिधः ग्रंथोऽदशभावानांफलंसं
तोष्टेनपुरा निबध्योनिर्विदागरेअतोनलिखितंमया १३ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिशृणुध्वंप्रयत्नतः वदंतिश्रीरोमकाचार्योज
नबुद्धेलोकफलं १ तान्निकोक्तेग्रहभावनफलंसम्यग्विचार्यते॥ लग्नेसौरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणेनाभास्करौ २ कर्मस्थानेभवे
द्रोमराजयोगस्तदाभवेत् २ नवमेतुयदासूर्यःस्वगृहस्थोभवेत्तदा तस्यनोजीवितभ्रातरकोपिपित्रभिःसहः ३ कर्मस्थानेनि
जक्षेत्रेयदिराहुर्भवेद्गृहः भौमशुक्रबुधैर्युक्तःसणेद्दृष्टःसयोसयः ४ धनेव्ययेयदालग्नेसप्तमेचयदाग्रहाः राजयोगसदाहीन
कुलपित्रपतिर्भवेत् ५ लग्नेकूरेव्ययेक्रूरेधनेमाम्यस्तथैवच सप्तमेचभवेक्रूरःपरिवारःसयंकरः ६ दृष्टेचभवनेभौमःसप्तमेरा

405
1941

कुसंभवः अष्टमेचयदासूर्योनस्यभार्यानजीवति ७ कर्मस्थानेयदाजीवोबुधशुक्रान्वितथाशशी सर्वकर्माणिसिध्यंतिराजमान्योभवेन्नरः ८
कुंभेमीनेधनेसूर्यामेषेभवतिचंद्रमाः मकरेचयशुक्रोभुंक्तेनैवपितुर्द्वयं ९ आदौजीवःसितःप्रांतेअदामध्येनिरंतरं राजयोगंविजानी
यात्कुटुंबबलवर्धनं १० क्रूराश्चतुर्षुकेंद्रेषुनथाक्रूरयुतेपिच दरिद्रयोगंजानीयाद्भूपतेस्वेक्षयंकरः ११ लग्नेचैवयदाजीवोधनेसौरिर्य
दाभवेत् राहुश्चसहजस्थानेमानान्यनजीवति १२ आदौजीवःपंचमेवादशमेचंद्रमाभवेत् राजमान्यश्चात्मबुद्धिसूर्यतोभवति म
त्यः सप्तमदिवसेसप्तमामान्यसंज्ञायः १४ उच्चस्थानेयदाभौमःरविराहुसमन्वितः लघुपीडाभवेत्तस्यआसनेनैवतिष्ठति १५ स्व
क्षेत्रस्थोयदाजीवबुधशोभितथैवच तस्यजातस्यदीर्घायुःसंपदस्तपदेपदे १६ धनेलग्नेव्ययेस्थानेसप्तमेनवमेग्रहाः राजयोगंवि
जानीयात्सकुलेनायकोभवेत् १७ मानस्थानेयदाजीवोलाभस्थानेशशीभवेत् सजातोग्रहमध्येतुविख्यातोकुलदीपकः १८ ज
न्मकालेत्वनीयेचशुक्रभौमदिवाकराः ग्रहेश्वरेनथाजातोअंधोपंगुश्चबालकः १९ द्वादशस्थोरविर्जीवोनवमस्थाशशिसौरको सौम्ये
नाह्यनेलग्नेमयातियममंदिरं २० होरायांनवमेसूर्योसोमेचैवदशनेश्वरे एकादशेभृगुगुरुर्दशमान्यजीवति २१ लग्नस्थितोयदापापाः
सौम्याद्वादशसंस्थिताः तदामरत्वंभवेज्जातोदेवराजोनजीवति २२ अष्टमस्थोशनिर्भौमोभास्करेणशशीतथा अष्टमेभार्गवगुरो
सप्तमामान्यजीवति २३ प्रथमस्थोयदापापोद्वादशस्थोयदागुरुः बुधोभवेद्यदातस्यनस्यजातस्यकिंफलं २४ रविर्चंद्रकुजःसौरिर्ज्ञ
यैवापंचमेपिवा आत्माहंतिपितामातामातांचैवनसंशयः २५ द्वादशस्थोयदासौरिर्जन्मस्थश्चभूसुतः चतुर्थःसिंहकेयस्यसया
तियममंदिरं २६ लग्नजीवोथवाशुक्रःसौम्यास्तेचशशीभवेत् पापाश्चैवनपश्यंतिजीवंहर्षशतंनरः २७ मंदचंद्रौयदारिस्थोयदापश्च
तिभार्गवः चतुर्वेदश्चविप्रोक्तस्यार्थेधनाधिपः २८ नवमस्थोयदाजीवोभृगुःसप्तमगोयदा बुधोलग्नगतोजीवोदीर्घायुःपुरुषोभवेत्
सप्तेत्रस्थेविलग्नात्तिधनभवनगेसूरिसूर्योभवेतांवंध्यासादवनाच्छशिधरशशिजोचेत्तदाकाकवंध्या चक्रानेनदृष्टसंत्रिदशगुरुस्त

नुष्यःसुनंदस्वजनसंप्राप्तिरद्विमेति २ लग्नतुर्यपविपर्ययेनरोगातक्रमनिरंतःसदाबलः सद्गुरोपिनरिभक्तिभाग्भवेत्क्षांतिश्चत्
जनकपक्षपालकः ३ व्ययस्थेतनयनंदनेज्ञयोविद्याश्रितवपुर्विशेषतः ज्ञानवांनिखिलसांगरःस्यादसौ कुलदीपकः पुमान् ४
लग्ननाथरिपुनाथव्ययस्थेद्व्यभूतिभवलाभभाजनं व्याधिवर्जितमहाबलोभवेद्वैरसाधनपरोरिसंग्रही ५ मूर्तिसप्तमपयोविपर्यये
प्रियस्त्रीपितरतःप्रियासुखा ज्ञालकानिकरसालकांगनासेवकोभवतिलोलमानवः ६ लग्नमस्तपविपर्ययेभवेद्वस्तुतत्परतनि
र्महाबलः चौर्यशौर्यनिरतोनरश्चिराद्याति मत्सरपदवीमथाहरेः ७ व्ययस्थेकरणधर्मनाथयोर्नित्यदेवगुरुभक्तितत्परः रानला
भसूनुनेकमानधर्मचार्वरदयोर्विदेशगः ८ ख्यातिमत्पभवलाभलोलुपोभूपतिर्भवतिनाभ्रसंशयः मातृभक्तिपितृभक्ति
सारभव्यस्थेतनुपकर्मनाथयोः ९ दीर्घजीवितयुतः क्षमान्वितः क्षोणिनाथकसकर्मकोविदः सर्वसिद्धसमूहसाधिर्ल
ग्नलाभपविपर्ययेयेनरः १० विनिमयेतनुपव्ययनाथयोर्बंधुपुत्ररुपवित्ययभोगकः धनपतिस्फुटयंबिंबुधोदितोजयतिज
न्मफलोदयदीपकः ११ श्रीमुरध्वजरभद्रबाहुविहितः श्रीजातकांभोनिधौउद्धृत्यांबुधबेकलेशभरदाः स्वार्थायलोकायच॥
श्रीमद्रोमकदेवसूरिगुरोः शिष्याणुनानिर्ममेसंक्षेपाद्विबुधेनमंदमतिनाजन्मग्रदीपाभिधः शास्त्रादशभावानांफलंसं
तोष्टेनपुरा निबध्यतिविदागारेअतोनलिखितंमया १३ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिशृणुधूम्रमयत्नतः वदतिश्रीरोमकाचार्योज
नकुंडलीफलं १ तत्रिकोक्तंग्रहंभावनफलंसम्यग्विचार्यते॥ लग्नेसोरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणेज्ञोवभास्करो २ कर्मस्थानेभवे
द्रोमराजयोगस्तदाभवेत् २ नवमेतुयदासूर्यःस्वगृहस्थोभवेत्तदा तस्यनोजीवितज्ञातरकोपिपित्तभिःसहः ३ कर्मस्थानेनि
जक्षेत्रेयदिराहुर्भवेद्गुरः भौमशुक्रबुधैर्युक्तःसणेद्दृष्टःसचोक्षयः ४ धनेव्ययेयरालग्नेसप्तमेचयदीग्रहाः लग्नयोगमदाहीन
कुलपितृपतिर्भवेत् ५ लग्नेक्रूरेव्ययेक्रूरेधनेसाम्यस्थेवच सप्तमेचभवेक्रूरःपरिवारःसयंकरः ६ षष्टेचभवनेभौमःसप्तमेरा

405
1941

कुसंभवः अष्टमेचयदासूर्योतस्यभार्यानजीवति ७ कर्मस्थानेयदाजीवोबुधशुक्रलग्नथाशनीसर्वकर्माणिसिध्यंतिराजमान्योभवेन्नरः ८
कुंभेमीनेधनेसूर्यामेषेभवतिचंद्रमाः मकरेवयसंशुक्रोभुंक्तेनैवपितुर्द्धनं ९ आदौजीवःसितःशेतेयदामध्येनिरंतरं राजयोगंविजानी
यात्कुटुंबबलवर्धनं १० क्रूराश्चतुर्षुकेंद्रेषुतथाक्रूराधनेपिच दारिद्र्ययोगंजानीयाद्भूपतेस्संशयंकरः ११ लग्नेचेवयदाजीवोधनेसौरिर्य
दाभवेत् राहुश्चसहजस्थानेमातानास्यनजीवति १२ आदौजीवःपंचमेवादशमेचंद्रमाभवेत् राजमान्यश्चात्मबुद्धिसूर्यतोभवति म
त्यःसप्तमदिवसेसप्तमासान्नसंशयः १४ उच्चस्थानेयदाभौमःरविराहुसमन्वितः लक्ष्मीशाभवेत्तस्य आसनेनैवतिष्ठति १५ स्व
क्षेत्रस्थोयदाजीवबुधभौशुक्रयेक्च तस्यजातस्यदीर्घायुःसंपदस्तपदेपदे १६ धनेलग्नेव्ययेस्थानेसप्तमेनवमेग्रहाः राजयोगंवि
जानीयात्सकुलेनायकोभवेत् १७ मातृस्थानेयदाजीवलाभस्थानेशशीभवेत् सजातोराजमध्येतुविख्यातोकुलदीपकः १८ ज
न्मकालेतनीयेचेद्राहुभौमदिवाकराः दानेश्वरोनथाज्ञातोभंधोपंगुश्चबालकः १९ द्वादशस्थेरविकुजौलग्नस्थाशशिसोरको सौम्य
नाद्यनेलग्नेप्रयातियममंदिरं २० होरायांनवमेसूर्योसोमेचेवद्रेष्काणे एकादशेभृगुगुरुदशमान्नजीवति २१ लग्नस्थितोयदापापाः
सौम्याद्वादशसंस्थिताः तदामरत्वंभवेज्जातोदेवराजोननजीवति २२ अष्टमस्थोज्ञानिकुजौभास्करेणशशीतथा अष्टमेभार्गवगुरो
सप्तमान्नजीवति २३ प्रथमस्थोयदापापोद्वादशस्थोयदागुरुः बुधोभवेद्यदातस्यनस्थानास्थिफलं २४ रविर्चंदुकुजःसौरिर्ज
क्षेचापंचमेपिवा आत्मार्हतिपिताभ्रातामातावेचनसंशयः २५ द्वादशस्थोयदासौरिर्जन्मभस्थश्चभेक्षतः चतुर्थःसिंहकेयस्यसथा
तियमंदिरं २६ लग्नजीवोथवाशुक्रःसौम्यास्तेचशशीभवेत् पापाश्चेवनपश्यंतिजीवेदुर्षशनंनरः २७ मंदचंद्रौयदारिस्थेदशमस्थ
निभार्गवः चतुर्वेदधरोविप्रोलोकस्याधेधनाधिपः २८ नवमस्थोयदाजीवोभृगुःसप्तमगोयदा बुधोलग्नगतोजीवोदीर्घायुःपुरुषोभवेत्
सप्तेवस्थेविलग्नात्तिधनभवनगोसूरिसूर्योभवेतांवंध्यासाद्वनाच्छशिधरशशिजोचेत्तदाकाकवंध्या चन्नातेनदृष्टसंत्रिदशगुरुस्त

नोचेन्मृतापत्यवानतनूगर्भस्थावंपुरंध्याकुरुनइहत्यादिस्यात्तथाभूमिनन्मा ३० अडुत७दानंसहितोवधेरतःसहस्रकैनःस्नेहवर्तिनौन
वमे रविजेप्रमदायुक्तोनानापरोमनारपीवज्ञायतेपुरुषः ३१ एकःपुत्रोरवौधास्थेचंद्रेनवमसंस्थितोहयं भौमपुत्रास्त्रयोवास्यांबुधेपुत्रोचतु
ष्टये ३२ गुरोचपंचपुत्राःस्युःषट्शुक्रेज्ञानिसप्तच पुत्रवंग्रहयोगेनचास्यंचैवविलक्षणैः ३३ एकत्रिपंचपुत्रास्यःधीस्तेसप्तकुजेगु
रौ द्विचतुःषट्समांत्यापुत्र्योज्ञेनसितेज्ञानी ३४ अथन्यत्संप्रवक्ष्यामिश्रृणुधर्म्मप्रयत्नतः यदंतिरोमकाचार्योपृच्छकस्यानुकंपया
३५ नवादौ लग्नंदेवःप्रभुःस्वामिलग्नंज्योतिःपरंमतं लग्नंद्वीपोमहान्लोकेलग्नंतत्रदिशांगुरुः ३६ लग्नंमातापितालग्नंलग्नं
बंधुनिजःसखा लग्नमद्रिर्महालग्नंलग्नंभंदेविसरस्मृती ३७ लग्नाद्दशमेधर्म्मेधिज्ञेयंग्रहगोचरं नरः कर्मानुरूपेणलभतेनात्रसंशय
लं ३८ प्रथमेमेषलग्नेपृच्छकःपृच्छति मेषोदयेगमनमिथुनेरंद्रीपांतानवादपरमंमकरादिपृच्छा उक्तेपिदेवपशुरूपविहारकर्मउ
क्तद्यतेविमलचेतसिमानवानो १ युग्मोदयेस्थाद्विपदादिसंस्थचिंतानोकानिनित्यंमरणंप्रयांति पशूश्चडुंब्यहरणंहवानांस्तेनेसमायां
तिहिपृच्छकस्य २ कर्केलग्नेस्त्रीक्रतुडिंभानांक्षितिरंकापरचक्रचिंता याचाजलायानयुक्तानयेनगोत्रेद्विवादप्रभुः ३ सिंहेसिंहपराक्र
मेविजयिनोराज्यादिचिंताभवेत् धान्यंतांहरणंयदेवनिलयंदुर्गादिदुष्टंभयं गोत्राणांविपदंपरस्परनियोगेचित्तविघ्नाधिकं ४ कन्यक
ष्टपरंचागीरनयनंपुत्रान्यसंपद्यते ५ कन्यैचिंताकन्यकानांकर्मणाक्रूरकर्मणोः गतप्रवासपुत्राणांकष्टंचद्विपदादिषु ६ तुलभीरिषु
संग्रामेगवाक्षक्रूरकर्मणां मानुलानंकरांकानांघस्रलाभादिनिर्णयः ७ तुलाधरेतोलिप्रियविहारवांछामागमंत्राणिसमंचशत्रुभिः
विवादसंगस्यगिरोगनाचचिंतास्यराज्ञांकिलनोकतुच्छना ७ अलिनिपीडनमाहवमात्मजंकलिकलेवरविग्रहेवरतं स्खलितनोय
तूनूनकष्टंभवतिचेतसिगोरचेतसं ८ धनुर्धरेधेनुधनुर्द्धराणांधानंचराज्ञांस्वजनान्ययोगात् पीडाविपत्तिर्गगनमन्यदेशंवा
स्यरंद्रेःक्लिवागनस्य ९ नक्रस्वरंदशकेनकरणेचरण— दृष्टेषंकुलोधंवापीकूपादिगेहहरणंहीममंवारमीमंतिनीनां संगंमेचा
रिणोनापरनरपतिजोभीतिमुच्चांविचित्यास्यछत्यागंतुकामः परभगतमदोज्योतिषंवासनीते १० कुंभेकूपकमेहनोदरवरंगंडा

407
1941

णकेशादिकर्णदाचास्किलेवरंचभतनेज्ञाकिन्यंपनामदा नीतंमीसकजातरूपमथकंकेनापमुक्तादिकं ४ लाचेतसिगतोविधिपदंत्र
कुंपशंचागनांत ९ मीनेमानवबाहिनीमुकुंदमुपसर्पणं जलयानंसमादाय हादध्वामुकुंदवत १० इतिपरभावचिंताश्रीधवायणे
कथिता अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिश्रृणिधूम्रप्रयत्नतः १ स्थिरेचंद्रेचरेलग्नेज्ञात्रुरायानिरुच्यते नायातिलग्नशीतेंशोविलोमस्थो
यदातदा २ परचक्रागमोद्विवाच्योलग्नेंद्वोश्वरभस्थयोः नास्त्यागमनमेवारिस्वयोगेवास्थिरस्थयोः ३ द्विवारे गतलग्नेचरराशिगतेवि
धौ मपंथानमर्कभागस्यस्वयंज्ञात्रुनिवर्त्तते ४ चरराशिगतेलग्नेशीतांशोद्विस्वभावगे (प्रालेयांशोद्विदेहस्थेनिश्चलेलग्नवर्त्तितः)
द्विधाभ्येतिरिपुर्नभ्रःपापदृष्टिनिवर्त्तते ५ चरराशिगतेलग्नेशीतांशोद्विस्वभावगे प्रालेयांशोद्विदेहस्थेनिश्चलेलग्नवर्त्तितः सद्
समागतस्यापिज्ञास्त्रोज्ञास्त्रेलिनिवर्त्तते ६ द्विस्वभावेविलग्नेंद्वोःनिवृत्तिमार्गतेरिपोः लग्नेंद्वोर्दृष्टयोःसाम्यक्रूरवीर्यंज्ञशाश्वतं ७
मार्गादेवरिपुक्रूरैःपुत्रारिस्थेनिवर्त्तते आगतायेःपदैःशीघ्रंतेरवस्वपुरंव्रजेत् ८ पापैःपंचमगैःज्ञात्रुमार्गाद्यावत्यगछति चतुर्थ
निकटस्थेपिभग्नसैन्यनिवर्त्तते ९ पापालग्नेःकुलीरारिकुंभमीनैःपराजयं प्राहश्चतुर्यदैःज्ञात्रोःपलायनमसंशयं १० सूर्यपुत्रज्ञशु
क्राणांयद्येकोपिचरोदये गमनागमनेस्यातांतदारक्षेत्रनक्रके ११ वीक्ष्यंतेमंदनीवाप्यांस्थिरेतुनगमागमो संग्रामस्थात्रिषट्धीस्थाः
क्रूरावेधोनिरूनये १२ परचक्रागमोनास्तिचतुर्थैकज्ञांकयोः बुधवाक्यतिरुक्रेषुभवत्येवनसंशयः १३ वृषसिंहधनुःसिंहयदि
लग्नेथवासरके ग्रहयुक्तवियुक्तावातदाज्ञात्रुनिवर्त्तते १४ लग्नपुण्यवतीद्वोतुयुतदृष्टेपरस्परं परागमनकर्त्तारोवन्यथाएयथाफ
लं १५ ज्ञांकपंतुलग्नर्क्षाद्यावद्विदिनसंख्यनेतु तावद्दिनानिज्ञात्रोश्च गमोंत्यर्थहोनचेत् १६ परागमनपृच्छायांलग्नेक्रूरःस्थि
तोचले। मार्गेप्यागच्छतःज्ञात्रोर्मृत्युर्दैवात्तदाभवेत् १७ इतिश्रीधवायणेपरचक्रागमनपृच्छा॥ ॥वदंतिरोमकाचार्यः पृच्छाज
यपराजय लग्नगतोयदीपापःपापेनदृश्यतेयदि लग्नात्सूर्यंयदिपापोवापिथुडुंतदाघोरं १ लग्नादेवमदशेनीवबुधेभागेवतथा सूर्ये
स्थानाधिपस्यविजयोनचभंगोभवेथवाभवति २ लग्नेसप्तमकेवादशमस्थानेस्थिताःसौम्याः स्थानाधिपस्यविजयंकथयंतिपराज

यंयान्तः ३ पापास्तृतीयपंचमषष्ठस्थायदिभवंतिवाल्लग्नात् नगराधिपस्यनगरंरिपुनृपस्तेनदायाति ४ लग्नाधिपगतेपापेसुधेन्तौ यच्चतुर्थगेसूर्ये घोरंरणमादिशेद्यमरणंनगराधिनाथस्य ५ नरलग्नेनदशमेयदिपापोयुध्यमानयोर्नृपयोः यायीपुरःपुरनाथस्तदा भवेन्नात्रसंदेहः ६ यद्येवकेंद्रेलेपोरायायीतुनवमादिके जयभागीयुतेसौम्येपापेनवतिभंगभाक् ७ क्रूरलग्नान्वितेलग्नेक्रूरखे क्वाविलोकिते आदिशेक्षितिपालानांयुद्धंभूरिभयावहं ८ इतिश्रीपवायणेजयपराजयपृच्छा अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिपृच्छासंधेश्च लक्षणं द्विपदोदयदशमेस्थानेसौम्यग्रहोयदिवा संधिर्भवतितदानीमित्यादेश्योहिदैवज्ञैः १ यदिसप्तमगाःपापोविषयस्तदा निदंडंवा पापाधिष्ठितलग्नेसंज्ञानोविघटनेसंधिः २ षट्त्रिनवांत्यगतसौम्यगुरुयुतलग्नेशभेक्षदृष्टेवा संधानसाध्ययोगो नि र्दैश्यंनिश्चयेनैव ३ नगाद्विस्त्राभात्लग्नेपापाव्ययगतास्तथा संधिंकुर्वंतिपापासुविरोधंद्विस्त्रभावगाः ४ संधिमापोक्लिमेसौम्यल ग्नेभवाद्यभेक्षिते क्रूरेलग्नगतेसंधीः सकलेपिविघट्टते ५ द्व्याद्यदृश्याद्व्याः केंद्रत्रिस्त्राःप्रकुर्वंतेप्रीतिं पापेक्षिताःपापास्तेभ्या प्रीतिदायकाः ६ केंद्रलग्नेशमित्राणिसंधिकुर्वंतिसद्गुहाः क्रूरास्तविग्रहंविग्रंथूनेशस्तद्दोदये ७ द्व्याद्यवर्गयुताःप्रीत्यैसौम्ययोगे क्षितावपि लग्नद्यूपाधिनारिरंध्रेपारिपंथिविग्रहं ८ इतिश्रीपवायणेसंधिपृच्छा वदतिश्रीरोमकाचार्योदुर्भगस्यलक्षणं॥ ॥ क्षेमलाभभयप्रीतिर्योगैर्यापिस्तथा दुर्भगंपरिजानीयाद्दुर्बलंदानपरिणा १ रिपुलग्नाधिपेक्रूरेक्रूरवायूनलग्नपे अन्योन्यक्षितयु क्तेचयुद्धायक्रूरवर्गगे २ लग्नेक्रूरेसुधेत्रिस्थेबांधवेकरणोदयः एतेसुवाचिरादेवमभीष्टानवमांशके ३ सक्रूरोवक्रितोवापिकेंद्रेषु डायलग्नप अस्तमोपितथाविद्धःषष्ठभावाधिपःस्तथा ४ पृष्ठायांमन्यगेक्रूरेदुर्गभंगोनजायते बलहीनेपिचक्रूरेकिंपुनर्बल शालिनी ५ क्षितिपुत्रोविरोधेणरादुर्गादिविलग्नगः शत्रुणापितदादुर्गभंगःकर्तुनशक्यते ६ सप्तमोयदिरादुःस्यादुर्गभं ११ क्षितिभज्यते मूर्तेक्रूरःशत्रोभुम्निक्रूरदृष्टिर्नशोभना ७ मूर्त्तिसप्तमयोःक्रूरभावेलग्नपतिव्यये षष्ठस्थेद्वितीयेचतदादुर्ग भज्यते ८ तदुर्गवेष्टिनंनेतिप्रश्नेवेलग्नपाव्यये धनेक्रूरास्तदादुर्गवेष्टितंतन्नगद्यते ९ द्वितीयेकादशेक्रूरावेष्टितंसभयंपुरं तु

409
1941

यंपरकादशेक्रूरावेष्टितंसभयंपुरं १० तुर्यस्थेसोम्ययुताक्रूरायष्टमेदृष्टेस्वयं दुर्गग्राहकियंतोत्रम्रियंतेदुनिएलके ११ लग्नेकेंद्रेषुचे क्रूरम्रियंतेबहवस्तदा छिद्रेद्यूनेसौम्यावेकत्रतदातिबहवोमता १२ यदिकेंद्रेयदातत्र बहूनांबंधनंतदा दशमेकाशपुत्रस्थोगुरुःसौ म्यस्तदाबुद्ध १३ प्राप्तेपराजयेस्वस्याच्चदुर्गस्थानोमहत्क्षयं सिंहरश्चिकरावीचकेंद्रेसौम्यग्रहेक्षिते १४ तथैवप्रश्नलग्नेवातदा दुर्गस्थसोस्यदा कीदृक्दुर्गस्यचित्तंस्यात्प्रश्नेत्युदितलग्नपः १५ समामार्गस्तदादुर्गजातायुद्धोद्यतःस्थिरः चक्रेचेल्लग्नयो र्न्यूनाभयचिंताहितोजनः सयद्यस्तंगतोबुद्धाभीरुर्दुर्गन्नसदा लग्नपोलग्नतुर्यांशंपश्येन्नरूभट्दृश्यः १० तुर्यस्थलग्न पोसौम्योदुर्गस्थेतेतदाऽभं बहुग्रहधनेलग्नात्सहायाबहवोन्तराः १९ धनस्थेनेचलग्नेपोलग्नमध्येधिकारवान् तंचपश्यति लग्नेशःशुभदृष्टयानदाशिभिः १९ समंयुध्यतिसद्भावाज्जनःसर्वापिदुर्गगः २० इतिश्रीपवायणेदुर्गभंगपृच्छा॥ ॥ वदतिश्रीरो मकाचार्यःपृच्छाभगटकस्यतु क्रूरःस्वचरोलग्नेविवादपृच्छाविवादिनं सर्वावस्थासुपरांनीचस्थेनयतिर्विदूषनां २ लग्नेयू नेचयदिक्रूरःस्वचरोविवादिनोर्नतदा कलहनिवृत्तिःकालेनजयतिबलवान्गतबलंतु ३ लग्नेद्यूनेमुक्तापरस्परंक्रूरयोःस कलदृष्टो विवदंतंवादियुगंसुरिकाभ्यांप्रहरतितंदेव ४ लग्नेशःसुहृदःसौम्याःकेंद्रेसंधिरयाद्यभाः लग्नेशेवेशिगोजावाएतेभ्य सुहृद्दोरणं ५ द्यूनेशाःसुहृदःसौम्याःग्रहाःसौम्ययुतेक्षितिः लग्नेद्यूनेचषष्ठारिसेन्योन्यस्यविग्रहाः ६ लग्नेबलाधिकेसंधा वर्थेभनिलग्नपः अबलेसप्तमेसंदाताभवतिसत्तमः ७ इतिश्रीपवायणेभगटपृच्छा अथगमनपृच्छा यदिपृच्छसिविदिङ्मि गनोगमनंपृष्टाचरोदयेवक्ष्ये यात्रायांकल्याणंघनघनलाभस्तदावाच्यः १ निरूपद्रवाहियत्रावांछितसिद्धिप्रदाग्रहैः सौम्यैर्पू र्णाधिगतैभयविद्रवपरिग्रहक्लेशाः २ स्थिरलग्नंपंचमगःपश्यतिनीचः शनैश्चरोयदिवा प्रष्टुर्नभवतिगमनंतदाभवेदेवमेव ति ३ चरराशिस्थेलग्नेगुरुबुधरविभार्गवेषुयद्येकः यात्रायांकथयतसवक्रगतिसन्निवर्त्तिवा ४ अत्रभशत्रुभैर्दुर्धरयोरदृष्ट थावल्लग्नरोधनेचमत्राः स्थिरराशौस्थिरलग्नेशेचिनीगमनंस्थितेनवरैः ५ चतुर्थेदशमेवापियदिसौम्यग्रहोभवेत् तदान

गमनंक्रूरेतत्रैवागमनंभवेत् ६ उरयगतेचरराशौरगगुरुबुधभास्करयुक्तगतः गमनमुपरिस्थितिपुंसोनिचर्ननंवक्रेसंस्थेना १० नि
रूपइवःप्रवासः क्रूरग्रहैर्वोछितार्थसिद्धिकरः वामभयपरिक्लेशःपापैरुदयस्थितैर्वापि ८ सौरांगिरसोःपश्येदेकोलग्नस्थि
रसमुद्यतेयश्च गमनंपरछेद्रनागतिर्नतेप्रांतवत्तया ९ सप्तमेशीतगोयुक्तेमार्गेपिगछतांनणां स्त्रीसंभोगोभवेत्लाहानमि
थुनास्थुमर्क्षितः १० गमनप्रश्नेनवमस्थानगतेद्यूतपभवेद्गमनं ११ इतिश्रीपद्मायणेगमनपरछा अथागमनपरछा॥ ॥
ग्रहसंयुक्तश्चतुर्थेग्रहप्रविष्टंप्रवासिनंविद्यात् सप्तमचतुर्थांतरगेग्रहेनरोमार्गवत्तेस्यात् १ लग्नाद्वाथचतुर्थांतरुक्षाद्वितीय
गास्तृतीयगावापि कथयंतिनष्टलाभंप्रवासिनश्चागमनंसत्वरितं २ लग्नाद्वितीयपंचमतृतीयगेईश्वरस्यचागमनं नष्टप्रा
प्तिःसौम्येः शीघ्रागमनंगुरुभ्यां ३ लग्नाच्चराचलिताःपश्येनोदशमनिर्यानान् राशेश्वरसंयोगक्रमाःकथितमन्यत्रगम
यंति ४ षष्टत्रिकोणसप्तमसंस्थेःपापैश्चसंदृष्टः दृष्टेदयेचमरणंप्रोषितपुंसः शुभैरयुतदृष्टः ५ नगमागमादिवाच्यंस्थिर
लग्नेनचरेविपरीतं द्विशरीरोमिश्रोक्तंपत्रलमुक्तंचरस्थिरभे ६ द्वितीयेवातृतीयेवाविलग्नादथवालग्नात् सौम्याःकुर्वं
तिनष्टप्राप्तिमागमंचप्रवासिनः ७ सप्तमेवाथषष्ठेवारवेश्चरःफंटकगुरो प्रवासीशीघ्रमायातिज्ञेशुक्रेचत्रिकोणगे ८ द्वितीय
केंद्रेतोभ्येतियदारवेरस्तदागमः आयातंसूर्यहंदृष्ट्वाभयादिदमसंहितः ९ इंदुःसप्तमगोलग्नात्पथिकंवक्रमार्गगं मार्गो
धिपश्चराश्यर्द्धांतपरिभोग्यावस्थितः १० चरलग्नेनवांशाच्चतुर्थेचंद्रमास्थितः ब्रूतेप्रवासिनंव्यक्तंसमायांतंस्ववेश्म
नि ११ गमागमौनतुस्थानांयोगेदुरधराक्षते शुभेशुभक्रतोरोधाःपापैस्तत्करतोभवेत् १२ मार्गेमार्गप्रतिर्वापि क्रूरखो
रपरेक्षटयोः मध्यगतस्तदावाच्योमार्गरोधस्तथोमतः १३ चरलग्नेचरांशोनास्थितेचंद्रेनथारविः परदेशात्तमाहूतिंग्रहाग
तामितिब्रूयेत् १४ प्रजातिसहनस्थानेनामसोयस्यांग्रहः आयातपथिकस्तस्यामेवमाऊंग्रहानप्रति १५ चरादयेचरांशे
वायदायांतिचलाधिकाः तदानयीसमाख्यांतिदूरादपिचरादपि १६ मार्गेथागच्छतःपुंसोविश्रामोग्रहसंख्यया सबलानिधिना

411
1941

दृष्टिनाच्यंस्वलनकारणं १७ लग्नाद्वालग्ननाथाद्वात्संख्याः क्रूरश्चरेचराः मार्गेत्यागच्छतोगंतुस्तत्रभावीडुपइवः १८ द्यूनेनीचेय
वाधस्थेचंद्रेलग्नेचरोपदि छिद्रनाथयुतोमत्युरिष्टश्चापिप्रवासिनः १९ प्रश्नेरुदयेलग्नेक्रूरेदृष्टेतुभक्षतेः क्षीणेकेंद्रगतेर्वापिप्र वस्याडु
पइवः २० क्रूरयुतेक्षतोमंदःसौम्ययोगविवर्जितः धर्मस्तनुतेव्याधिंप्रोषितस्याष्टमोमृतिं २१ लग्नाद्वालग्ननाथाद्वत्संख्याःसौम्यरवेचराः
मार्गेनत्रोदयांवाच्यःस्थानेस्थानेविचक्षणैः २२ अष्टमेभ्योवदन्मार्गेभयंवाच्यंकुजेपिवा यावंतोप्यष्टमरेवटाघोरास्तावंतएवहि २३ ल
ग्नस्थानबलीयस्त्वे धनस्थापनथेवच तस्मात्पद्वैनेवक्रयोमार्गचारिणां २४ यत्रगुरुर्भवेद्देवोपत्रशुक्रोबलाश्रयः प्रपातद्रागपापारि
वक्रयंतत्रनिश्चितं २५ चंद्रेशुभेनदीमार्गेराड्स्वन्योमहद्भयं नगगेहेगुरौतुंगेनिधिलाभोभवेन्नृपात् २६ नृपगेहेगुरौतुंगेनिधिलाभः
पथिःस्थितः षष्टेपुष्टेगुरुर्व्याधिरित्येवंगुरुरोहितं २७ अष्टमेभास्करेभौमेदृष्टिदृष्टेयुतेथवा चंद्रदृष्टेभवेन्मार्गेद्राबुघातोरिडवः २८
पुरोलग्नेथवाद्यूनेक्रूरयुक्तस्करसंकरे नष्टवाहानवाहानिवक्तव्यापथिगच्छतां २९ नोविश्रामचरेलग्नेद्वौविश्रामौस्थिरात्मके॥ विश्रामत्रि
तयंप्रोक्तंद्विस्वभावाद्विचक्षणैः ३० यथासंख्यानिकुंभेयुलग्नेयानेषुगच्छतः गमनागमनेनैवचारैरवहयंभवेत् ३१ अष्टमस्थेनिशानाथेसं
दृष्टेःपापवर्जितैः प्रवासीस्करवमायातिसौम्यैर्लाभसमन्वितः ३२ इतिश्रीपद्मावणेआगमनपरछा वदतिश्रीरोमकाचार्योद्दीप्तपरछास्वमा
त्मनं त्रिकोणचतुरस्रात्मस्थितेपापग्रहेग्रमे ग्रहैर्निरीक्षतेक्रूरैर्नूनंबंधनमादिशेत् १ ग्रहमागतोनवदसौकिंवदूरिमत्यहत। इतिप्रश्ने मूर्तौ
क्रूरोयदितत्रहतोद्दोथवापुरुषः २ सप्तमगोष्टमगोवाक्रूरास्तहतोथवद्वोवा मूर्तौचसप्तमेवापिपद्मलग्नेस्थमेभवेत् क्रूरस्तदासोपुरुषोबद्ध
श्चहतश्चमुच्यतेचपरं। रामवाद्यूहतमिदंचारख्यातक्रूरविषयमिह ४ बंधःसप्तास्थगेक्रूरमूर्तिस्तेचाप्तलग्नेवा बद्धोतमुच्यतेतथाक्रूरः अ
यातनोयुतः ५ इति अथबंधमोक्षपरछा निरूपमुक्तिविषयेकेंद्रेकेंद्राधिपोनमोक्षाय तद्वर्षेक्रूरःपुनरूर्ध्वकेंद्रविशेषेण ३ यावत्क्र
कोबलीलग्नेनावच्चारबलाधिकाः अस्तेगतेननोशुक्रेबंधमोक्षादिसंभवः २ चरोदयेक्षणेःशीघ्रंमोक्षोयोगेस्थलाभरैः स्थिरमोक्षो
विलंबेनबंधःक्रूरैस्थिरस्थिरैः ३ चंद्रलग्नादयेक्रूरेक्षत्रेषुत्रानोत्रिकोणचतुरस्रः सप्तमसंस्थेवापापैर्दृष्टेबंधः शीघ्रमोक्षश्चरलग्ने ४

अचिरेणाचिरमंदोदीर्घकालेनतुस्थिरे मध्यमेनहिमस्थिरेलेमोचयेद्बंधनस्थितिं ५ मित्राधिपशत्रुभेर्युक्तेरष्टप्रश्नोदयेथवा मेषत्रिकोण
केंद्रस्थेबलेबंधाद्विमुच्यते ६ मृत्युद्धरणकर्तृनौश्चफलेनसदृशत्रयं म्रियतेयेनयोगेनतेनमुच्यतसंकटात् ७ क्षेमेणनोसमायाति
मृत्युयोगेसमागतं आमयाद्वीनम्रियतेबद्धःक्षीप्रेणमुच्यते ९ इतिबंधमोक्षरुक्ष अथमृत्युयोगरुक्ष लग्नेरष्टोदयेपापैःखेचरैः
केंद्रवर्त्तिभिः निधनेस्वेसुधाधामिरोगामरणमाप्नुयात् १ लग्नान्निधनगःपापैरोगिणोयदिजन्मभं पश्यत्तदानयत्याशुरोगिणो
यममंदिरं २ दृक्काणाम्बुजगाश्लिष्टगृध्रक्रोडसमानना मारयेत्स्यात्तुरंगीप्रनिधनेयदिचंद्रमाः ३ विलग्नादष्टमेशत्रुरेक्षीणंदृक्कं
द्रवर्त्तिनि कस्मिंश्चरिपुक्षेरवेटयेद्यागीर्यातियमालयं ४ पापैर्लग्नस्थैरस्तेसौम्यैर्वीर्यविवर्जितैः नियतंनितरांरोगीत्रीप्रंक्षीनाशमं
दिरं ५ सौरांस्तेत्रिदशत्रीलग्नेसूरेस्तेभरुरेथवा पापकोथरुमःसौम्याःविबलारोगमृत्युदा ६ आद्यकादशमेत्रिकोणषष्ठसप्तमगा
स्तथा रोगोपशमंसौम्याकथयंतिमृत्युंच ७ चतुरस्रगतेचंद्रेपापैदुरधराश्रिते मृत्युर्बलयुतेसौम्यैरष्टभागाभवारुज ८ स्मरेधने
व्ययेक्रूरोलग्नमृत्योरिपाद्यगौ मध्यामृत्युकरोयोगःक्रूरेवाचंद्रपार्श्वगे ९ लग्नेरविःस्मरेचंद्रोभवेद्योगोथमेवहि एतेषुरोगिणोमृत्यु
सद्यःसज्जास्यचापदः १० ऋक्षैरयुतरुक्षार्कैःसपापैनवमेयदा तदानींपरदेशस्थान्मृत्योर्वेलग्नमृत्युभागभवेत् ११ रंध्रेपतेकेंद्रगते
लग्नपेतोह्यदोरिपोमृत्युः लग्नेद्वारंभगतेक्रूरेश्ववीक्ष्यतेमरणं १२ लग्नेद्यूनस्तमितःप्रश्नेभ्युदितोमृत्युपोबली षष्ठीवाछिद्रगो
वेवाचंद्रेचम्रियतेनरः यस्मेचंद्रेव्ययेक्रूरेसद्योपिम्रियतेजनः १३ चंद्रेष्टमेधनेक्रूरेसद्योमृत्युकरःस्मृतः १४ लग्नेमृत्योद्यूनेचंद्रेस
द्योरोगार्दितःसौम्यतः चंद्रोलग्नेन्यूनेभानुःसद्योमृत्युभवेदयं १५ मेषलग्नस्थेसर्वेवृश्चिकांद्योत्क्रमीश्वरं मेषाश्वंद्रमंसुक्तलग्नदा
मृत्युक्षणादयं १६ लग्नपोमृत्युपश्चापिद्यूविंद्यातितमेजनः दृक्काणेयदिलग्नेपलायांतेस्मृतिर्ध्रुवं १७ पृष्ठायामथलग्नाच्च
चतुर्थंदशमेतथा ग्रहाःक्रूराद्याजाःषष्ठअष्टमेस्थाच्चदामृतिः १८ पृष्ठायाःसमयेलग्नाधिपतिर्भवतिग्रहाः यदिवास्तमितोमृ
त्युःसज्जापिनदाभवेत् १९ लग्नस्थेश्वेतरुद्राद्यौसौरिद्वादशनवमःकुजः अष्टमोर्कःसदामृत्युःस्याच्चेन्नबलवान्गुरुः २० रविःष

413
1941

क्षेत्रनीयेवाद्यौचरुग्नमे तदाभवतिमृत्युःस्यात्तृतीयेपंचमेतदा २१ उदयेपंचदशानेवाधिभवंतिक्रूरखेचराः अष्टभिर्दशभिर्वापिस्याद्वि
नैःपंचनातदा २२ धनुर्मिनयोःसप्तमयोर्व्ययगाभ्यांयुतः तदाव्याधिर्मतावास्याद्ज्योतिषादिनिर्णयः २३ इतिश्रीपवायणेमृत्यु
योगरुक्षसमाप्तः॥ ॥वदतिश्रीरोमकाचार्योरिष्टभंगस्यपृच्छकं लग्नेपापेमृत्युभेश्वाधिलग्नेस्थानात्पापेयदि स्थितोदृक्काणेरुक्तिम
तदामूनिनिरामया १ यथागेहेस्थितःस्वामीपाथेयपुरतोध्रुवं तथालग्नेस्थितेनाथेजीवत्येवनसंशयः २ लग्ननूर्येग्रहाधीवर्षलग्नेद्यौ
तनोदिनाः जीवत्येवतदावश्यंग्रहैर्विद्धोपिमानवः ३ इत्यरिष्टभंगरुक्ष धर्मेरवेचारिपोलाभेतनौयेस्मरेतनौ सौम्यारोगविनाश
यपापनाद्यायगेरिणां १ लग्नस्थानबलाधिक्येलाभस्थाद्बलादिभिः रोगीजीवतिपूर्णेश्चेद्वीतरोगोनवत्सरं २ लग्नेद्यौभ्युदितोल
ग्नेमृत्योर्यांलगतंपुनः रोगग्रस्तेनरेवाच्यंरोगग्रस्तोपिजीवति ३ रोगग्रस्तेबुधैर्ज्ञेयंसप्तमंरोगसंज्ञकं यावंतःखेचरालग्नेथवालग्ने
क्षपार्श्वयोः ४ दृश्यमरुक्षनेयदायुक्तंदृश्यंचश्रुतायहैः सदाक्षभंसरोगस्यपापैःपापंविनिर्दिशेत्॥ ५ यावंतःपुरुषावाच्यारोगि
णोपिरामापगाः पुंग्रहैः पुरुषास्तत्रस्त्रीग्रहैःप्रमयुन—ः ६ रोगस्थानेचरैर्दृष्टैःसंचरन्ग्रहमध्यगः उपविष्टःस्थिरोरोगीरुक्षेवा
च्योद्विदेहके ७ रोगिणोस्यवुभुक्षानविनष्टेवनिरंबरे रक्तंचंद्रेविनष्टेतुविनष्टंरुधिरंवदेत् ८ चरेष्टमेपुरदेशोस्थिरेतत्रैवसंस्थितः
यामद्वितयमध्यस्थोरोगीनेवेहदेहके ९ छिद्रस्थेचंद्रशुक्रौचेद्गीचारसमादिशेत् छिद्रस्थावुद्यनाभौमौबलपातायकीर्तितौ १० भौ
मार्कीरुधिरोद्रेकंपितोद्रेकंचसंस्थिते सन्निपातंकरोतिच ११ छिद्रस्थोराहुमार्तंडौकुष्ठरोगप्रदायकौ प्रददातिम
हाकष्टंताभ्यांयुक्तःश्रयेत्तिच १२ ग्रहोचरोद्दोचवातरोगंस्फुटंवदेत् कंपनेहस्तपादौतुरोगस्यैवंविनिश्चितं १३ मदा—भवतीतिरुक्
प्रश्नेवयतनुर्गतः यामंरोगंचतुर्थस्यादौषधंसप्तमंरुजः १४ रोगप्रश्नेक्रूरलग्नेरोगोधिकेवाच्यकोविदान् तत्रैवक्षभस्वकीयैर्भय
ज्यरोगनाशकरः १५ क्रूरेसप्तमसंस्थेमांद्यादपरंप्रवर्त्ततेमांद्यं सप्तमगेवथसौम्येसज्जोरोगीविनाषधंनभिषक् १६ तुर्येयेबलयुतौ
चंद्रोचपरंत्रिकोणगोलग्नं पश्यंतोचकाष्टमग्रहाधिपास्संगतेनस्तः १७ वैद्योषधेबलाधिक्येबलेरोगरागिणोः रोगीजीवतिनिर्वि

प्रतिपरीतविपर्ययः १८ वैद्यस्यरोगिणोमैत्र्यंमैत्र्यमौषधरोगयोः व्याधेरुपशमोवाच्यःप्रकोपस्तद्विपर्ययात् १९ लग्नेत्रासबलस्थे चकेंद्रसौम्यबलेपिच उच्चस्थेचत्रिकोणेचारोगीजीवतिमानवः २० इतिश्रीपवायणेरोगपृच्छा अथान्यल्लंग्नवक्ष्यामिश्रृणुयूयंप्रयत्नतः वदंतिश्रीरामकाचार्योचौनाघःपृच्छास्वगात्मने १ पृच्छतःकुशलाप्तानंलाभोवाव्यवहारतः बुद्धनंवपनंचाब्धौनौविप्रश्चतुर्थगा॥ लग्नप्राप्तिद्रपश्चापिज्ञायायांयदितिष्ठतः तदाप्रवहप्रश्नेप्रश्नंभवतिवापिनी ३ लग्नंपश्यतिलग्नेशःछिद्रेछिद्रेश्वरायदि नष्टंवदति दोषोनोलाभोभवतिचिंतितः ४ अस्तंगतोपिलग्नेशोलग्नंतुर्यंतथाष्टगः क्रूरस्थितिरछायांगतपापनिरीक्षतः ५ लग्नंपश्यति लग्नेशश्छिद्रेछिद्रपतिर्नच पश्यतोनेवपृच्छासुपेतबालतदाधवं ६ यदाछिद्रेशलग्नेशौनोचेद्वाशत्रुवेश्मनि नोचेत्तनवमेसंस्थो लाभोनव्यवहारतः ७ लग्नंपश्यतिलग्नेशःछिद्रभवतिवाक्पतिः व्यवहाराद्धनोलाभः सूरिप्रश्नेसमागमः ८ बलयुक्तेहिलग्नेशेछिद्रेशातेचभागंवे अक्रूराध्यासितेनत्रसंस्थेलाभोजलोद्भवः ९ अष्टमेचंद्रसंयुक्तेरुछलग्नेबलोत्कटे परदेशाद्यवस्तूनांलाभोभवतिनिश्चितः १० उच्चस्थैः शुभैर्युक्तेमूलत्रिकोणसंस्थिते परदेशाद्यवस्तूनांलाभः ज्ञातगुणोभवेत् ११ प्रश्नलग्नंसमंस्याद्दशमं- ----काणं तुर्यंपराणमाकुरितिरत्नायानपात्रस्य १२ द्विश्चिचतुःपंचगृहातदक्षिणादिक्रूनवदशाद्ययलाभः वामोभागश्चिंद्रेपश्चानीष्टंचन्निकटं १३ एकाशेनरशेनवाशुभाशुभंकथ्यतेशुभैःकेंद्रैः षष्ठेव्ययगेक्रूरेस्तमितेनोःसमेतसारेयनः १४ लग्नेदक्षिणभागानशुभाशुभंगछतोभवतियाने वामभागेतुपुनःकुरुतेव्यावर्त्ततेमानी १५ गोमेदशमवज्रेविद्युत्ता नादिभत्यंतेपोतं हिबुकस्थेभौमवाद्विरथकिमपिनदृष्टं १६ लग्नंचेद्भौमनिमुखानुभज्यतेलग्नपोवत्र यद्वायस्मिन्नराशौलग्नेशस्तस्यराशीशः १७ वक्रीनीचास्त्याभ्येतिलग्नाधिपः शुभैर्युतः वस्तुसमेतंक्रूरैरेशाभ्येतिवस्तुविना १८ अथवावत्रमाधिपतिर्विलोकितेकिंतनहिह नाम्निनो वेत्रमपतिः कर्मस्थस्तदाविलंबननौरेति १९ अथहिबुकाधिपयुक्तोदृष्टोवालग्नपोयदाभवति लग्नप्रांतगतोवानदाचनौशाघ्रमायाति २० कर्कस्थपूर्णबलोजीवःशुक्रंविलोकितंवापि लग्नस्वामीलग्नंविलोकयेत्तदागमनं २१ मार्गेशः शुभदृष्टेलग्ने

415
1941

शः सूर्यवीक्षितोवापि क्षेमेणतदायानंशत्रुसकाशात्समायाति २२ अथवानिहनिभुवनंविलोकितेचंद्रमायथाबलवान् यातिमित्रलाभयुक्तंतनःपुनःशीघ्रमायाति २३ कर्कस्वामीहादशारंध्रगतोवातदान्यदेशोनोधर्माधिपतोपश्यत्यल्पव्ययश्चपरदेशे २४ दुश्चिक्येधर्मपतिः षष्ठपतिव्ययगतोष्टमेवापि पोतस्यादिपरवाकथितंनाजिकमतेचेत्तत् २५ अथहिबुकेशोमंदश्चीरभयंक्षीणदृष्टलग्नसंयुक्तः णचंद्रदृष्टेवापोतद्रव्यभयंकुरुते २६ कर्मेशः क्रूरयुतकर्मगरहंपापवीक्षितंभवति वितनोतिकूपभंगंपरबाणभंगंनुरात्रयंति २७ क्रूरद्वयसंयुक्तःकर्मेशः सिटविनाशकोभवति रात्र्यंसिभक्तेर्युक्ताआदिमध्यांतदेशेषु २८ सद्दनेशोमंत्रस्थः क्रूरयुतःक्रूरवीक्षितोवापि यानेप्रधानपुरुषंकरोतिमंदग्रहत्रशाश्च २९ अथमस्तगतोमंदःशशिदृष्टोभवतियाननाशकरः वारेरुक्षाणकरोतिभंगंच नियमेन ३० यदिभवतिकर्कलग्नेनिशाधिपोवीक्ष्यते चतुर्थपतिनानाभ्यनुनारएंलग्नंसमुद्रमध्येतदाभंगः ३१ कर्कस्वामीक्रूरोरथिवशविलोकितोथवानिः हिबुकंपश्यतितत्रगतोवातदापहणंस्थलेचटति ३२ अथसोम्यग्रहैर्युक्तोदृष्टोवापिशुभैश्चरैः यानेपाणक्षेमेणगमिष्यतिलग्नादपि ३३ मीनेशकर्कवंदुःपश्यतिरात्र्यंस्थितश्चयदि हिबुकस्थानाधिपतिमंत्रगरहंपीक्ष्यतेचयदि ३४ व्यायगोव्ययभुवनेशोव्ययभुवनालोककोथदृष्टायां भवतियदजलमध्येप्रवहणभंगोनसंदेहः ३५ युग्मं मत्स्यस्थोवाशानिनाभौमेनलोकितोथवारविणा एकांशोप्रांतगतंतदातरेयानभंगः स्यात् ३६ अस्तेशः क्रूरारिभक्तिसंयुक्तोनवीक्षितःपापैः नवमस्थःसदृष्टोरविणाचंद्रेणपरदेशः ३७ अंगारेपरयुक्तंनतायगोमंत्रयोविलोकयति लग्नेशोवालग्नंपश्यतिचेत्यातपरवासः ३८ अस्तमितेनीचोवामत्स्यसिनवमगोरियुतेक्षेत्रे लाभःस्वल्पकरोयानकदाचिल्सर्वथालाभः ३९ लग्नाधिपतिर्लग्नंविलोकितेनैवमत्स्यपोमत्स्यं यानमज्जतिजलधौइतिकथितंरोमकाचार्यैः ४० लग्नपोमत्स्यपश्चापि अस्तेस्थानामुपोयदि तदावापनिकांकृत्वायानमायातिमंदिरे ४१ क्षेमेणायातिनोप्रश्नेमत्स्ययोगेसमागते रोगिणांमत्स्यरादेयाबहुशीघ्रप्रमुच्यते ४२ व्ययेधनेस्मरेक्रूरेएतेषांसप्तमःज्ञाशी योगोयंमृत्युदःश्वंद्रःपापयुतोथवा ४३ लग्नेसूर्यःस्मरेचंद्रोमत्स्ययोगःस्मृतापरैः रोगिणोमत्स्यरोतेषुस्वस्तेविपदमादिशेत् ४४ स्थिरलग्ने

गुरुदृष्टेपरिवासोभवतियानपात्रस्य पृच्छाकालेऽज्ञातावक्तव्यंग्रहवशाच्चेनत्व ४५ मध्यस्थानाधिपतिस्त्रिकोणपतिःपापवीक्षितो
भवति लग्नंचपश्यतियदितदाप्रवासोनसंदेहः ४६ आगच्छत्यत्रलग्नंदृष्टेनेदेनज्ञाधरेणापि कथयत्यत्रगृहंपथिरिपुपति
ज्ञानिदृष्टमरिष्युद्दः ४० यदिज्ञोवोथबुधोवापश्यत्यत्रांतदारणंनिवृत्तिः अथयदिभौमःपश्यतिमहारणंजयंचपर्यासः ४८ र
विणादृष्टंलग्नेलग्नपतिमंदवीक्षितयुतोवा यवनाचार्यैर्दृष्टंमुष्टेश्चोरस्यस्थानं ४९ इतिषवायणेनावप्रकरणं अथान्यत्किंप्र
वक्ष्यामिश्रृणुधूम्रप्रयत्नतः वदतिश्रीरामकाचार्यपृच्छालाभस्यलक्षणं १ स्थिराद्रवमनुष्याणांलाभदानरराशयः चिंत्योऽ
भस्मसंज्ञोपिलाभप्रकरणात्स्फुटं २ लग्नाष्टव्ययगश्चेद्वेनेष्टःपूर्णोपिलब्धये क्षीणेषुसर्वभावेषुमध्यफलस्मृतः ३ लग्नं
चंद्रजंचंद्रः क्रूरोवायदिपश्यति धनलाभोभवत्यत्रकेवलंनर्थोपिदृष्टतः ४ विलग्नस्थमलग्नस्थंयद्यर्क्षवीक्ष्यतेशनि कावार्त्तोध
नलाभस्यधननाशस्तुजायते ५ लग्ननाथस्तुचेत्तात्कालिकैरवलोकितः अर्थलब्धिक्रोत्येवबलोलग्नबलान्विते ६ शुभदः स्वामि
षड्वर्गःलग्नेसौम्ययुतेक्षितः तत्रतत्कालिलब्धिरलब्धिस्त्विपर्यये ७ सहजत्र्योमगाः क्रूराःलग्नद्यूनगताः शुभाः दृष्टालाभकरा
श्चेव्यस्यस्वाज्ञाकराःशुभाः ८ व्योमस्थःक्रूरसंदृष्टोलग्नाच्चंद्रादिसंस्थितः करोत्यनर्थसंतापंकावार्त्तोधनलब्धिषु ९ मृत
धर्मगताःक्रूरालग्नंपृष्टेदयंयदि नास्तिलाभोविनाज्ञास्तिनदृष्टंसामचिंतितः १० बालोवायदिवालाभोध्वंवीक्ष्यचिरायतः शुभाधि
क्यफलप्राप्तिरन्यावाच्याविपर्यये ११ चंद्रलग्नाधनाधीशादृष्टयुक्तापरस्परं धनलग्नत्रिकोणस्थाःसद्योलाभकरास्मृताः १२ एवमेव
शुभाःकेंद्रेचिरलब्धिःकराःकिल क्रूराःकुर्वंतिदारिद्र्यंनामामेवव्यवस्थितः १३ शुभदःस्वामिनामित्रेधनायार्कयुतेक्षिते लब्धिर
लब्धिपर्यायेनास्तिलब्धिस्तनिर्भवेत् १४ शुक्रेत्र्योमिथुनेलग्नेबुधेनभव भूमिजः तदालाभोथवालाभोगुरोलग्नगयोरवो १५ गु
रोलग्नेरवौमध्येद्यूनचंद्रेथवांबरे लब्धिर्भावात्सगोःसौम्यैःपापैरलगेस्तथा १६ क्रूरमध्यगतेचंद्रेसक्रूरैक्रूरवीक्षिते धनलाभाधि
क्येचनलब्धिर्नबलेपिवा १७ लग्नपतिर्व्ययगस्याद्व्ययनाथोलग्नगोथदुष्टोवा सौम्यःसव्ययकारीअसव्ययंतदितरःकुरुते १८

इतिश्रीषवायणेलाभप्रकरणं यदिवेनापिएकेनलग्नेनवासौम्यसव्ययकारी लग्नलग्नेशश्चंद्रादृष्टोन्यथाविलोकयेत् १ सप्तमंसप्तमेश
श्चनस्वस्थायविलोकयेत् कतिनस्थतिनष्टार्थंदशमंचनिरीक्षयेत् २ यच्चइत्थंकृतंध्वानस्यार्थोयंविचार्यते यदिचूनयहःप्रश्नेनाये
लग्नंपंक्तं ३ प्रपश्यनस्तदानत्रनष्टविस्मृतमाप्यते यस्यांराशौभवेच्चंद्रस्तद्राश्यधिपेनचेत् ४ दृश्यतेचंद्रमाप्रश्नेनष्टंचलभतेत
दा ५ दृष्ट्वावायदिज्ञायेज्ञाःसूर्यराशौविरश्मिकः तथालग्नपतिःपश्यत्प्राप्यतेतत्रतस्करः ६ ज्ञायेज्ञाः केंद्रगोमात्रानिश्चितंहृ
तंनपश्यति नष्टंशुभग्रहैस्तत्रलग्नंदृष्टंनदृश्यति ७ बुधगुरुज्ञकेयदिवाप्रत्यंकाकेंद्रगाभवत्यते कथयंतिनष्टलाभंतथान्यलाभंप्र
छायाः ८ चंद्रःसंपूर्णतनुर्यदिलग्नस्थोवीक्षितोगुरुणा लाभोभवतितदानींचिरनष्टस्यापिलग्न ९ उदयेनिरपहृतायाःसंग्रहो
यात्कालाद्राशीकमद्राः तच्चुस्यदिनैर्लाभंकुर्यात्सद्यस्तसंपूर्णः १० योगेषुयेषुचास्यः पापग्रहसंयुतानिकेंद्राणि तेषुनष्टवाप्ति
र्न्यूनंन्यूनंचनदृश्य ११ पापाद्वितीयपंचमकेंद्रगतालग्नगतोयदावास्युः नतदानष्टवाप्तिर्नजयोनचकर्मसंसिद्धिः १२ सलग्नसप्त
मयोःपापासौम्यानवमलग्नयोः विस्मृतंचलग्नंनष्टंतदास्वस्थमवाप्यते १३ शुभमिथुनहरितुरगाःशुभान्विताःपापदृग्योनुस
वाः वितरतिसकलंवितमथमारोग्यंमध्यगानभसा १४ लग्नाद्दूनचतुर्थादशमाद्वितीयगास्तृतीयगावापि कथयंतिनष्टलाभंप्र
वासिनश्चागमंचरितं १५ ज्ञायापःसूर्यराशौचेत्तल्लग्नंस्वामीनपश्यति तस्करस्वीकृतेद्रव्यंप्रयत्नेनकथंचन १६ धनंपानिःस्रतः
सूर्योदुदितेभवतिस्फुटः तदाकिमपिनस्वस्थंतुप्राप्यतेतत्रनष्टकं १७ धनेज्ञलग्ननाथेहोलग्नंयदिनपश्यत नानिःसरतिज्ञोपि
लाभन्यतुकथापिका १८ यदिचंद्रोस्तपस्यज्ञालग्ननाथेनसंयुतः परप्रार्थनयानष्टंदायत्तेनलभ्यते १९ द्यूननाथेक्षितंनष्टं
नष्टंन्यंतुलग्नपे दुर्बलेलब्धियोगेश्चलब्धिकर्णसरवावहाः २० सक्रूरोलग्नपःकेंद्रेचोरास्त्येवशुभेन्यथा अस्तस्वामिविनाज्ञेतुन
स्मरोपिविनश्यति २१ श्रीषवायणेचोरितलाभेवस्तुप्रकरणं अथचोरप्रकरणं चंद्रार्कदृष्टिगेचंद्रेगृहेयाच्चेवतस्करः एतदेव
तत्रालोकेप्रतिवेश्मगतोजनः १ अथान्यभवनेभस्थाचंद्रादित्योप्रपश्यति लग्नंचलग्ननाथंचचोरागृहनभश्चरेत् २ चंद्रादित्योस्तरा

413
1941

ज्ञोश्चेवभूत्वालग्नंप्रपश्यति तदाग्रहनरश्चौरोवाऽर्थंबुद्धिविज्ञारदैः ३ द्विस्वभावकराज्ञोश्चेत्तच्चंद्रादित्योयदिस्थितौ प्रविशेद्योपिचो
रःमनसोपिग्रहंमालुषः ४ ---ज्ञायापतिर्लग्नगतद्वितीयोवाथद्वादशः तदाकर्मकरश्चौरश्चेवाकर्मकरोभवेत् ५ ज्ञायेज्ञोयदितुं
गस्थस्तदाचौरापिनायकः स्वगृहेयदिज्ञायेज्ञातस्तोलोकविश्रुतः ६ ज्ञायेज्ञोयदितुंगस्थात्तदामातात्तनस्करो सूर्यस्तपोपिता
चोरः शत्रुकृत्पीन्तिज्ञानो ७ अस्तेपचगुरोवाच्योग्रहस्वामीत्तनस्करः भौमेज्ञातोथवापुत्रोमित्रवस्वजनोबुधः ८ स्थिरोदये
स्थिरांशेवावर्गोत्तमगतोपिवा स्थितंतत्तेन द्रव्यंस्वकीयेनवचोरितं इतिश्रीपवायणेचार्यज्ञानं अथागतवस्तुज्ञानमाह॒
गतंकुत्रचतुष्टिभागेचंद्रेलग्नतिरश्चकः यदिचंद्रोभवेल्लग्नतदापूर्वंगतंभवेत् ९ दशमचंद्रभवेच्चवत्तत्तदानुष्टंनुदक्षिणे सप्तमेचभ
वेच्चंद्रतदाविनंतुपश्चिमे २ चतुर्थेचंद्रवेच्चंद्रस्तदासाम्यादिगुच्यते मत्तांतरेणदिग्भागोविज्ञातव्योविचक्षणैः ३ अग्निराज्ञोच
पूर्वस्यांजन्यराज्ञोगतोत्तरो पश्चिमेवागुराज्ञोचद्भमिराज्ञोचदक्षिणे ४ दिगाख्यांकेंद्रगंतरंभवोवदेद्विलग्नक्षात् मध्याच्चु
तिर्विलग्नान्तवांशैकैर्योजनावाच्या ५ इतिश्रीपवायणेदिग्ज्ञानपष्ठा अथनष्टपष्ठा मिर्मिथुनांशेवास्थितस्तंप्रपश्यति यदा
ज्ञानिस्तदावस्तुहिजातीयंगवावदेत् ९ दशमस्थंसुराचार्यसमाचार्यंदिपश्यति तंदेकजात्यरूप्यंतुद्रव्यंगच्छतिनस्करैः २
मेषमेषांशकेवापियदिचंद्रोबलीभवेत् स्वर्णंरूप्यद्रव्यंनष्टंघटिकंनाणकादिच ३ दृष्टेचगुरुशुक्राभ्यांतत्रचंद्रोऽस्तंभवेत् रत्नंरू
प्यगतंप्रश्नेतज्जिकंज्ञारत्नसंभवं ४ वृषेगुरोचचंद्रेचकिंवाऽस्तनवांशके वस्त्राणिराजयोग्यानिनानारूपाणिसंदिशेत् ५ मिथु
नेमिथुनांशेवाज्ञीर्णरूपगतंभवं कर्कंकर्कांशकेवापिज्ञात्वानेधनंगतं ६ दृष्टेचंद्रोभवद्यत्रकेंद्रेधर्मेतुमंडनं सिंहेसूर्येक्षितेवाचंचंद्रेतत्र
वसंस्थितं ७ हेमरूप्यंचनष्टंस्यात्तरुणंवस्त्रनष्टवित् ८ सूर्येदृष्टेगेंद्रेतत्रवसंस्थिते लोहकांस्यंभवेन्नष्टंघटिताघटितंतुधनं ९
इतिश्रीपवायणेद्रव्यज्ञानपष्ठा अथनिधिपष्ठा येकाकिन्यापितुर्यंज्ञातुर्यंपश्यतिवाऽस्थिते क्षीणवल्लभिनेवापिध्रुवंज्ञेयोनिधिर्गृहे १
स्थानत्रयेषुसौम्याश्चेन्निधिस्थानत्रयेतनः धनंवस्त्रद्रव्यगृहेतुर्यगेहेमहानिधिः २ छिद्रस्थानेषुपूर्वेषुमनोनानानिधिःपुनः

419
1941

ज्ञस्तत्रवेदानुगमेनरूपस्वर्णादिनिर्णयः ३ दूरेतुर्यंपतोद्रव्यंविद्धतेनलभतेनहि चंद्रेधित्रेपितुःस्थंहिलभ्यतेनत्रवत्सरे ४ जायायां
छिद्रगेहेवामंगस्थेपदिरत्नेश्वरः तदाज्ञात्वाग्रहनावांचअतीतानांनिधिंध्रुवं ५ शनिराहुमृतोभावेपरस्थायांरत्नेचरोक्तमात् द्रव्यंलग
तानांतुद्रव्यंभवतिनिश्चितं ६ निधिप्रश्नेविलग्नेचेद्राहुर्भवतिरत्नेश्वरः छिद्रेरिक्तस्थायांचैधानंचेवत्रभवते ७ मूर्तौवापथ
मातुर्यैसप्तमेवाग्रहेयदि दशमेवाभवेच्छुक्रोनिधिरत्नीतिसूचितं ८ मूर्तौवातुर्यगेवापिसप्तमेचग्रहेयदि दशमेवाभवेज्ज्ञी
वःसचंद्रोनिधिदायकः ९ मनौवेचंद्रशुक्रेचतुर्यगेहेनिधिर्भवेत् सरलंहाटकंरूप्यंघटिनाघटितं द्वयं १० बुधःश्चंद्रोगुरुः
गुरुःशुक्रोधनंवाहिबुकोपिवा स्वयंनिधिंप्रयच्छंतिचाम्यंवाबलिशालिनी ११ स्थिरस्थानेस्थितादेतेपश्यन्त्येवारवेचराधनं नि
धिंयच्छंतिपूर्ववांछितंवद्यधूननात् १२ यत्रशुक्रोक्षितोनत्रचक्रमध्येनिधिःस्फुटः शुक्रदृष्टेपुरोवापिगेहंखंडविलक्षयेत् १३
यत्रगुरुक्षितोनत्रचक्रमध्येनिधिःपुरः यत्ररेवाधनाभावेतत्रपश्यन्निधिर्बुधः १४ तुर्यंज्ञकेंद्र---दृपवरकेनिधिस्तदा तु
र्यंज्ञोवाद्यराज्ञोचनग्रहाद्धिनिधिःपुनः १५ यत्रलाभोभवेच्छुक्रः स्वयंवास्वजनस्थचा धिष्टितंचत्रदृश्यतेलक्ष्यतेबहुलंध
नं १६ इतिश्रीपवायणेनिधिपष्ठा॥ ॥स्त्रीरत्नलाभादिस्थितश्चंद्रोनिरीक्षितः कन्यालाभोबुधोवांशैः शुक्रभैः केंद्रकोणगैः
कन्यात्रिंशगतेलग्नेनत्रकन्यानवांशके वीक्ष्यतेचंद्रशुक्राभ्यांकन्यालाभःप्रकीर्तितः २ तुलाप्रपकुलीरेषुशुक्रेंदुयुतिदृष्टि
षु कन्यालाभोभवत्येवरवीवाबलिनिस्मरे ३ केंद्रत्रिकोणगेसौम्येदृष्टेद्यूनंगनाप्तयः स्त्रीग्रहेलग्नपोसौम्ये दृष्टेवास्त्रीग्रहां
शके ४ शुक्रेंदुजस्युर्गास्थेद्विपदस्त्रीनवांशगो सर्वैर्यैलग्नधीस्थेकन्यालाभायकीर्तितो ५ स्मरांशोपचयेचंद्रेकन्याप्रामीत्य
वीक्ष्यते लग्नाकन्यासमक्षानीवरलाभोन्यथास्त्रियः ६ चंद्रोलग्नपतिर्वापिकन्यालाभायद्यूनगो द्यूनपोलग्नमःस्त्रीप्रेस्त्री
लक्ष्मीः स्वगनाधुना ७ चंद्रबुधोयदिदृश्येतेभगुणापूर्वलग्नस्थेन दृष्टाकलेकन्यांलभनेपुरुषसदाभीष्टं ८ रविनन्दनयेवि
यमस्थेगर्भेपुरुषोत्तमेनारी लग्नोभायांपुरुषोभार्यासमतेलभनिसंशं ९ गोतुलाभेनकुलीरेषुसंयुतेवीक्षितेपिवा निश्चा

नायकऋक्षकाण्यांकन्यास्थांविनिर्दिशेत् १० मिनेऽयुग्मराशिस्थेद्विपदस्त्रीनवांशको योषिन्नाधिकरोलग्नेपत्न्यंनोवीर्यसंयुतो
११ स्त्रीद्रेक्काणेविलग्नेचेत्तत्रैवस्त्रीनवांशकेः दृष्टःसितज्ञांशकाभ्यांविनिर्दिशेत्पत्नीसङ्गवेत् १२ स्त्रीग्रहांशाविलग्यस्थेप्रमदाभवन
स्थिताः खेचरावीक्ष्यमाणाःस्युः कुमारीलाभशोभिनः १३ इतिकुमारीलाभप्रश्नः अथेशोयदिलग्नस्थोलग्नेशोव्ययगोभवेत्
तदाविवाहप्रश्नायांविवाहोभवतिध्रुवं १ कुर्मायस्मरदृश्चिक्यगनघस्थोनिशाकरः दृष्टोजीवनदंपत्योभवेत्संबंधकारकः २
शास्त्रंप्रदीपवादित्यवस्त्रकीर्षुनिःस्वनः प्रश्नकालेकुमारीणांस्यर्मंगलविधायकः ३ केंद्रगतोस्त्रीपुरुषोकन्यांशकस्थितो
यदिक्षेनो लग्नगतेकन्योद्वांपाणिग्रहणंतदावाच्यं ४ इतिश्रीषवायणविवाहप्रश्नः॥ ॥ इतिश्रीरामकसिद्धांतेश्रीषवाय
णंसमाप्तं॥ ॥ श्रीः ॥ ॥:~ ॥:~ ॥:~ श्रीः ॥:~ ॥:~ ॥:~ ॥:~

924

421
1941

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

इतिरोमकसिद्धांतसमाप्तः ॥ श्रीः संवत् १२५०